ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

मार्च 2026 / वर्ष 10 अंक 12

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518
CNS
Network Services
CompuNet Solution
COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING
GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates
बुकिंग मात्र
11000 में
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक
जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक
डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक
केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक
डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक
मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग
सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग
केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि
आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),
डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

• कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ •• स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से •
HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

भउजी भौंहन तीर चलल
—जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5–6

आलेख / शोध लेख / निबंध

भोजपुरी गीतन में होली वर्णन
— डॉ ब्रज भूषण मिश्र/14–16
भउजी देंह अंइठली अउरी फागुन आय गइल
—मनोज भावुक/17–19
बसंत आ रहल बा—जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/20–21
फगुआ के लोक दर्शनःराग से विराग तक
—शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'/22–24
गाथा में गूंथल होरी के चित्र— दिनेश पांडेय/25–27
भाषा,सत्ता आ वर्चस्वःहिन्दी थोपल आ
भोजपुरी के हाशियाकरण के भाषाई विमर्श
— डॉ संतोष पटेल/40–42
बिहारी मजदूरः एगो कविता—एगो व्याख्या
— डॉ विष्णुदेव तिवारी/42–44

कविता / गीत / गजल

भइया फागुन आय गइल
—डॉ शंकर मुनि राय 'गड़बड़'/12
दू गो गीत—जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /13
जब से बहल बयारि फागुन के — दिनेश पाण्डेय/27
फागुन राग—डॉ सतीश कुमार श्रीवास्तव 'नैतिक'/28
फाग राग—कनक किशोर/29
डोले पूरबी बयार— लालबहादुर चौरसिया 'लाल'/30
फगुआ के फुहार—हरिओम हंसराज/30
आकृति के बयार—आकृति विज्ञा 'अर्पण'/31
दू गो गीत — डॉ अशोक द्विवेदी/33
देखु सखी फागुन आइल बा
— शैलेंद्र पाण्डेय 'शैल'/34
केहू आइल—डॉ सुनील कुमार उपाध्याय/34
अइलें बसंत—डॉ हरेश्वर राय/35

कविता / गीत / गजल

प्रकृति से खेलवाड़—सविता गुप्ता/35
आयल जगावे फगुनवाँ—उमाशंकर शुक्ल 'दर्पण'/36
बसंत—सन्नी भारद्वाज /36
सखि फागुन आइल
— रामजियावान दास 'बावला'/39

कहानी / लघुकथा / रम्य रचना

होली के दिन—अंकुश्री /7–10
अपनापा—डॉ रजनी रंजन /11–12
कृष्ण, मैकाइवर आ प्रेम—आकृति विज्ञा 'अर्पण'/32
तिरिया जनम जनी दीह विधाता
—गीता चौबे 'गूँज'/32
भुलरु बाबा के रहस्य— बिम्मी कुँवर सिंह/37–39
फगुआ कइसन?
—रामसागर सिंह ''सागर'' /45–46

■■

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता
साहित्यांगन

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भउजी भौंहन तीर चलल–

जबले अनचहले ई बसंत कलेंडर से बहरियाइल बा ,तबले केहू केकरो बाट नइखे जोहत । कहे के मतलब ई बा कि सभे बारी–बारी से फगुआसल बा । जइसे फागुन केकरो बाट ना जोहे, बेबोलवले अइए जाला आ सभे के अपने ढंग से नचाइयों जाला । हाँ – हाँ , ना – ना भलही करत होखे केहू , रंग – अबीर से कतनों भागत होखे केहू बाकि फागुन रुखरे सिर चढ़ि जाला । लइकन से लेके सयानन तक आ बुढ़वन से लेके जवानन तक सभे के चाल ढाल, बोल – ठोल खुमार से भरि के रहि रहि छलकि जाला । प्रकृति त आपन रंगत पकड़ के जीव – जंत, पशु – पक्षी, मरद –मेहरारू सभे के सिरे फागुन के निसा लगा देले । महुवा के कोंच से लेके आम के बगइचा तक , सेमर आ परास के पेंडो एकरा से ना बाचेलें । कतों कोइल के कुहूंक जियरा जरावेले , मन डहकावेले आ परदेसी पिया के इयाद टटका करा देवेले , त कतों गाँव – गिरांव के मचान , मड़ई आ चउतरा पर बइठल बुढ़ऊ बाबा लोग कब मानेले चिकारी करे से। ई फागुन हौ बाबू ! लाज के झीनी चदरियो के ना बकसे । तबे नु , लोक मानस मे ई गीत पंवरत दे खाला –

"फागुन मे बाबा देवर लागे , फागुन मे"
भा
बिहँस बहल पुरवइया /खींचे लागल अँचरा ।
नवकी संगे घोर पुरनकी /सभके आँखिन कजरा।
लइका लइकिन का संगे
बुढ़वो बउराइल बा। कादों फागुन आइल बा।
• जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बसंत आ होली जीवन रस के ताजा राखे भा सूखत रस के बढ़ियावे ला , बरिस मे एक बेर सभे के मिलावे ला अपने रुचि से आइये जाला । भोजपुरियन के मन मिजाज के अपने रस से सराबोर कइए जाला । फेर त गाँव – गाँव , गली – गली मंदिर – मंदिर महिना भर पहिले से लेके बुढ़वा मंगर तक ले सभ होरियाइल रहेला । देखि न –

रँग फगुनी बसन्ती रँगा गइले राम ,
धरती – गगन रस बरिसेला ।
• भोलानाथ गहमरी

फाग आ होरी के गीत जवन दादरा आ कंहरवा के ठेका पर गावल जाला , कान मे परते दिल के धड़कन बढ़ा देला । फेर त मरजादा के धकियावत , मन मे भरल गुबार के बहरिया देला । बुढ़वन के जवानी आ जवानन के लइकइ के दिन मन परे लागेला , तबे त बलेसर यादव के कहे के पड़ जाला –

लड़िकन पर बरसे जवनकन पर बरसे
उहो भींजि गइलीं जो अस्सी बरस के।
फगुनवां में रंग रसे – रसे बरसै ।

होरी के बात होखे आ कासी के इयाद न आवे , इ कइसे हो सकेला । होरी केहू के ना बरिजे , तबे नु भूतभावन भगवान शंकर काशी मे होरी खेलल ना भुलाने –

"भूत प्रेत बटोरी दिगम्बर , खेले मसाने मे होरी"

बदलत समय के संगे एह घरी सगरों कंक्रीट के झाड़ झंखाड़ उगि आइल बा , फेर कोयल बेचारी कहाँ कुंहुंको, फागुन आ फगुनहट कइसन बाकि इ मन ना नु मानेला , रहि रहिके गुनगुनाए लगेला –

सखी , घरे मोरे अइने नंदलाल ।
खेलन को होरिया ।
भींजल अंगिया चुनर मोर उलझल
रंग दीहने मोर गाल । खेलन को होरिया ।

• जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

मंहगाई के मार झेलत आजु के समाज क तीज–त्योहारन से लगाव गवें गवें बिला रहल बा । समहुत पलिवार त सपना के सम्पत हो गइल बाटे । चिरागो लेके हेरले पर मिलल मुसकिल बा । ओह पर जात पाँत आ धरम के मोलम्मा आग मे घीव लेखा बा । हम बड़ त हम बड़ के चकरी मे नीयत से लेके संस्कार तकले पिसा गइल बा । एक दोसरा के बढ़न्ति देखल अब केकरो सोहात नइखे । जहवाँ देखि , सब अपने चेहरा चमकावे मे जुटल बा , ओह मे दोसरा पर कनई फेंकलो ना भुला रहल बा । एक दोसरा के हाल समाचार लीहल अब केकरो दिनचर्या मे सामिल नइखे । जरत – बुतात मनई अपना अगिला पीढ़ी खाति कइसन इमारत बना रहल बा , ओकरो नइखे पता । कबों मसाने मे होरी खेले वाला भगवान शिव के आजु के हाल देखी –

"चिता भसम लिए हाथ
शिवा नहीं खेल रहे होरी ।
अजुवो हौ प्रेतन को साथ
शिवा नहीं खेल रहे होरी" ।

- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी आ भोजपुरियन के रीत रेवाज के जोगावल आज एगो लमहर काम बाटे । उठास जिनगी मे मिठास घोरल आज एतना जरूरी हो गइल बा जेतना कबों लछिमन जी के संजीवनी पियावल रहल होई । आजु जहवाँ अपना रीति–रेवाजन से लोगन के दुराव हो रहल बा, ओकरा देखते इहो कहल बाउर ना होखी –

बिला रहल होली के सगुनवाँ,
फगुनवा आइल बा दुअरे।
आइल बा दुअरे हो, आइल बा दुअरे
फगुनवा आइल बा दुअरे।

तिसियो ना गोटाइल ना पोढ़ाइल मटरिया
पछाड़ भइल सरसो, बन्हाई ना गठरिया
रहरी के छिमिया बजावे ना घुघुनवा,
फगुनवा आइल बा दुअरे।

■■

रउआ सभे के आपन––

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक

होली के दिन

अंकुश्री

बजार नयकी दुलहिनिया जस सजल बा। हजारों लोग आपन-आपन जरूरत ले के पहुँचल बा। पाँच दिन बाद होली बा। लोग रंग-अबीर, गरी-छोहारा, किसमिश-अखरोट ले रहल बा। घी-तेल, मैदा-सूजी आदि तरह-तरह के समान के खरीदारी हो रहल बा। कोई खाली रंग आउर अबीरे खरीद के होली के खरीददारी पूरा कर रहल बा। बाकिर मीठा के दोकान पर हड्डा लेखा भीड़ जुटल बा। पूरा बजार में खरीद-बिक्री के भीड़ लागल बा। अपना-अपना इच्छा के मोताबिक लोग समान खरीद रहल बा। साँच पूछल जाओ त जरूरत आउर इच्छा से समान लेवनिहार के अँगुरी पर गिनल जा सकेला, जादे लोग के औकादे बोल रहल बा। अपना-अपना जरूरत के कामचलाऊँ इच्छा में ढाल के माल तउला रहल बा।

ई हाट हफ्ता में दू बेरा लागेला। बाकिर आज बजार जवान सोहागिन मेहरारू लेखा खूब सज गइल बा। आज के बाद फेर होली के दिन एह हाट में बजार लागी। निज होली के दिन बजार करे के केकरा फुरसत रही ? एही से बजार में आज जादे भीड़ उमर आइल बा। बाकी दिन खुदरा आ उधरिया गहँकी जस बजार मनहूस लेखा लागेला। बजार के मुँह से गुजरे वाली सड़क के किनारे अबीर छान के बिका रहल बा। अबीर गिरला से ऊहाँ के सड़क कनिया के माँग लेखा रंगा गइल बा।

एने लोग खरीद-बिक्री में लागल बा आ ओने समसुनरी के अवाज सुनाता - “दूध लेव - - - - दूध।” दूध लेखा गोर समसुनरी के अवाज सुन के ढेर लोग के नज़र ओकरा ओर मुड़ गइल। दुकानदारन के पहिले से मालूम रहेला कि अब ऊ दूध लेके आई। समसुनरी के देख के ढेर मरदानन के आँख में दोसर भाव जाग जाला। ओकर सुनरई देख के मेहरारुअनो के मन में डाह के आह समा जाला। बाकिर एगो बात रहे कि समसुनरी पर एह सब बात के कवनो असर ना पड़त रहे।

समसुनरी के तेलकट साड़ी गंदा होके मटमइला भ गइल बा, जे ओकर दुधिया रंग के आउर निखार देले बा। ओकर बलाउजो गंदा भ गइल बा, बाकिर अबहीं नये बा एह से चमक रहल बा। आठ दिन पहिले दूध बेच के लवटे के बेरा एगो गुलाबी सारी आउर बलाउज के पीअर कपड़ा लेले रहे। साड़ी फगुआ खातिर रखले बिआ आउर बलाउज गाँवे के दरजी से सिलवा के पहिर लेले बिआ। फगुआ के दू दिन पहिले समसुनरी के मरद अईहन। ऊ अइहन त अतना गंदा साड़ी पहीर के उनकरा सामने कइसे जाई ? इहे सोच के ऊ आपन कपड़ा खरीदले बिआ। समसुनरी अब ई जान गइल बिआ कि शहरी लोग गंदगी पसंद ना करे।

रोज ऊ शहर में दूध बेचे जा लिआ। शहर में ऊ ढेर लोग के देखे लिआ, बाकिर एके आदमी के शहरी समझे लिआ, अपना मरद - सुरेशवा के बाबू के। शहर में बाकी लोग के देखला पर ओकरा कइसन दो बुझाला। ऊ अपना मरद के छोड़ के दोसर जादे शहरी के उजड्ड समझे लिआ, खास कर के ओह शहरी के जे ओकरा के दूध बेचे के बेरा कुछ-कुछ बोलत रहेला। ऊ जब दूध बेचे बजार जा लिआ त जेठ के घाम लेखा चढ़ल एकर जवानी देख-देख के लोग कुछ फिकरा कस देवे ला। समसुनरी के ई ठीक ना बुझाए। कोई सामने से बोलित त ओकरा के जबाबो दिहित। बाकिर मुँह छिपा के एने-ओने से बोले वाला के ऊ का कहित ? ऊ चुपचाप आगे बढ़ जालिआ।

समसुनरी के मरद कलकत्ता में रहेलन। दू गो देवर बाड़न, उहो ओहिजा काम करेलन। बड़कू देवर के एह साल बिआह भइल ह। ऊ खेत संभारे के बहाने, अपना मेहरारू के मुँह देखे खातिर गाँवे पर रह गइल बाड़न, कलकत्ता ना गइलन हँ। समसुनरी दूध बेच के साँझी खानी घरे लवटल हिअ त ओकरा फेर सुरेसवा के बाबू के इयाद आ गइल बा।

पाँच बरीस पहिले समसुनरी के बिआह भइल रहे। अब ओकर सुरेशवा तीन बरीस के भ गइल बा। ओकरा गाँव से शहर तीन कोस दूर बा। ऊ दू बरीस से शहर में दूध बेचे आवतिआ। कुछ दूध घरे-घर उठवनिआ बा आ कुछ दूध खुदरा बिका जाला। एकरा पहिले शहर जाए आ दूध बेचे के काम ओकर सास करत रहली। बाकिर अब ऊ शहर जाए का ना चाहेली। ‘अब हम तोरा लेखा जवान नइखीं नू। भर ढींढ़ खा के लड़कोरी बनल रहला से काम ना नू चली। - - - - का तोर मरद ऊहवाँ से कवनो तोड़ा भेजऽता ? - - - - कि नइहर के शान पर बइठल ठूंसबे - - - -?’ सास के अइसन ताना सुनत-सुनत समसुनरी के कान पाक गइल रहे। ऊ शहर जा के दूध बेचे वाला काम अपना जिम्मे ले लेले रहे। शहर जा के दूध बेचला से ओकरा हाथ में दू गो पइसो रहे

लागल बा, भलहीं ऊ चोरउके काहे ना होखे।

समसुनरी के माई-बाप अपना समझ से करेजा लेखा आपन बेटी के रिस्ता बहुत सुखी आ संपन्न घर-परिवार में कइले रहे। आ खुद समसनिरियो जब सुनले रहे कि बत्तीस बिघहा खेत बा, तीन जोड़ा बैल बा, दुआरी पर एक जोड़ा भंइसिओ बिआ, कलकत्ता में ससुर कमाए लन - - - - त उहो सोचले रहे कि भले सहेजे-समेटे के पड़ी, बाकिर मलकिनिये के जिनिगी बिती। नइहर में गोंइठा पाथत-पाथत ओकर हाँथ महकत रहत रहे।

खेत-बघार के काम ओकर सास आपन एगो बिधवा बहिन आउर कवनो एगो बेटा के साथे रख के करे-करावेली। भोरहीं-भोरे खाना पका के समसुनरी गोंईठा पाथेलिआ आउर तब एगो दउरा में कुछ गोंइठा रख के ओमे दूध के तीन-चार गो हँड़िआ सजा के शहर चल जा लिआ। शहर में एने-ओने छिछिआत दूध बेचत चले लिआ। लवटे बखत ओही दउरा में भईंस आउर बैल खातिर खरी-कोड़ाई, मीठा, नून आउर घर-खरची के जरूरी समान ले ले चढ़त बेरा ले घरे पहुँचे लिआ। घरे पहुँचला के बाद बटोराइल गोबर के फेर गोंईठा बनावे में लाग जा लिआ। बिना खइले-पिअले ओह घड़ी एक हाथ से करम आ दोसर हाथ से गोंईठा पाथेलिआ। जानवर के सानी-पानी कइला के बाद बेचारी के पगुरावे के मवका मिल पावेला। घर में जेने-जेने समसुनरी जा लिआ ओकर सुरेशवा ओकरा पाछे-पाछे लागल चलेला। सुरेशवा में समसनरी के ओकर बाबू के परछाहीं लउकेला। सुरेशवा के देख के ओकरा सुरेशवा के बाबू के इयाद आ जाला।

गाँव भर में लोगन किहवाँ कुछो-ना-कुछो बहरा से आ रहल बा। होली के समय बा, हर जगह अँजोर बुझाता। बाकिर समसुनरी के दुआरी पर अबहीं तकले उदासिए छइले बा। ना सवांगे आईल आउर ना सौगाते। ऊ पड़िआर साल संकरात के गइलन से अबहीं तकले ना अइलन हँ। कुछ दिन भइल ओने से एगो चिठी आइल रहे। ओमे लिखले रहस कि ऊ अपना दिल से हमरा के इयाद करत रहेलन। हमरे इयाद में ऊ भुलाइल रहेलन, जे सुन के हमार मन खुस होखो। समसुनरी के इयाद आवता, ऊ आगे लिखले रहस - हम हरदम उनका इयाद आवेनी, चटकल से लेके डेरा तकले, हरदम। बाकिर छुट्टी ना मिल पइला से ऊ नइखन आ पावत - - - -।

जबाब में समसुनरिओ एगो चिठी गाँव के मुनुशी जी के बेटा से लिखवले रहे,

''सुरेशवा के बाबू के सुरेशवा के माई के तरफ से परणाम।

''ईंहवाँ के समाचार ठीक बा। राउरो समाचार ठीक रहो - भगवान से इहे मनावत रहिला।

''रउरा दस दिन खातिर कवनो हालत से ईहवाँ जरूर आ जाईं। हमार तबीअत ओही तरह से खराबे रहऽता। राउर बाबूजी आउर माई हमरा के देखावत नईखे लोग। रउरो ना पूछेब त हमार देखनिहार के बा ? औरत के देखनिहार आ करनिहार ओकर बाँह पकरनिहारे नू होखे ला।

''ईहवाँ बहुत काम बा। राउर भाई दस दिन से अपना ससुरारिये में बाड़न। अइसे काम ना नू चली। रउरा काम के भीड़ संभारे के बहाने दस दिन खातिर कवनो तरह से ईहवाँ चल आईं। रउरा कामे के बहाना लेके आईं। राउर मउसिओ लड़खड़ा गइल बाड़ी। बाबुओजी के खाँसी से परेशानी भ गइल बा। दिन-रात खों-खों करत रहेलन। ऊ बेकारे बईठल खाँसत रहेलन।

''हमरा के रउरा ऊहवाँ बोलवले बानी। भला रउरे बताईं, राउर माई-बाबूजी लोग भला हमरा के जाए दिहें ? हम कवनो तरह से ऊहवाँ नईखी आ सकत। रउरा गइला साल भर से जादे भ गइल। हम कहत बानी के खाली कमइले-खइला से जिनिगी के सब काम ना नू चल जाला। जिनिगी में आउरो त कुछ होखेला। रउरा समझदार आमदी बानी, खुद समझ जाईं। रामअयोध्या असाढ़े-सावन ले ईहवाँ से जाए के कहत बाड़न आ जात नइखन। रउरा ऊहवाँ से हाल्दी से चिठी भेजीं कि रामअयोध्या ईहवाँ से जास। मउसिओ रउरा के देखे खातिर बेचयन बाड़ी।

''रउरा हमार तनिको फिकिर होखी त जरूर चल आएब। माघ में रउरा चम्पा कल गड़ावे खातिर आवे के कहले रहीं, अबहीं तकले ना अईनीं। अब राउर माई आ मउसी काम करे खातिर का दोहरा के जवान होखिहें ? बाबूजी त बीमरियो से गइल बाड़न। उनका से कवनो काम के आस अब नईखे। ईहवाँ नाद में पानी भरत-भरत हमार हालत पातर भ गइल बा। छव-छव गो नाद बा। अकेले हमहीं बानी। कतना करेब ? राउर सब बहिन-वहिन लोग अपना-अपना घरे बाड़ी।

''जवन समान रउरा भेजले रहीं, ऊ मिल गइल। बाकिर ईहवाँ तमासा भ गइल। रउरा जब जानेनी त काहे के कवनो समान भेजेनीं ? माई आउर मउसी कहत बाड़ी कि रउरा खाली अपना बेकते के चिन्हत बानी। एहसे रउरा चाहीं कि उनकरो खातिर एकहक गो साड़ी भेज दिहीं।

"खैर, रउरा अपना समझ के मोताबिक काम करेब आउर इहवाँ जरूर चल आएब। आवे के बारे में हीरा चाहे शोभा से खबर भेजब।

राउरे चरणदासी,
सुरेशवा के माई।"

चिठिओ भेजला दू महीना भ गइल रहे। बाकिर अबहीं ले ना सुरेशवा के बाबू आइल रहस ना चिठी के जबाब आइल रहे। जब-जब अँगना में कउआ बोलेला त समसुनरी के बुझाला कि ऊ आवत बाड़न। ऊ कउआ उचरावे लिआ, 'ए कउआ, उचर त, ऊ आवत बाड़न ? उचर त तोरा के दूध-भात देब।'

समसुनरी तीन बेरा सगुनो बिचरवा चुकल बिआ। अंतिम सगुन में निकलल कि धुरिए गोड़े चलल आ रहल बाड़न। एह सगुन से ओकरा करेजा के बहुत शांति मिलल रहे। बुझाइल रहे कि ऊ आ गइल होखस। ऊ झट-झट दोसरके दिन नया साड़ी आउर बलाउज के नया कपड़ा खरीद ले आइल रहे। काल्हे महकउआ तेल के छोटकी शीशी आ गुलाबी रीबनो बजार से खरीद के ले आइल बिआ।

काल्हे साँझी खानी ऊहवाँ से गाँव में एगो आदमी आइल त खबर ले अइलस कि दू दिन होली के रही त ऊ अइहन। एह से समसुनरी काल्हहीं से बहुत खुश बिआ। दूध आउर गोंईठा बिका गइला पर काल्हे ऊ गाँव लवटे के बेरा अबीर खरीद लेलस।

आज ऊ कलकत्ता से आवे के बाड़न। समसुनरी भोरे से उनकर राह जोहत बिआ। देखते-देखते आजो के दिन निकलल जा रहल बा। ऊ भोरे से उनकर इंतजार में बिआ आ 'शहर में रंग-अबीर के हल्ला बा' कह के आज ऊ दूध बेचे ना गइल हीआ। हाली-हाली सब काम ओरिआ के केस झरलस, रीबन अंउसलस, काहे कि होली के दिन शनिचर पड़ल बा - नया चीझ कईसे अंवासी। शिंगार कर के डेहुरी में आके समसुनरी ठार भ गइल। सामने कुछ दूर के बगइचा से होके गाँव के रस्ता आवेला। डेहुरी के दुआरी पर ठार होके ऊ बगइचा के रस्ता निहार रहल बिआ।

ऊपरी बेरा गाँव के एगो आदमी साइकिल से हहरात आइल आ ओकरा सास से कहलस, "बेटा आवत हवा। बस से अबके उतरलन हँ। हम एने साइकिल से अइनी हँ त सोचनी कि खुशखबरी सुना दिहीं।" खबर सुन के समसुनरी बहुत खुस भइल। ओकरा खुसी के ठेकाना ना रहल। खुसी से ऊ अगरा गइल। कुछे देर में बगइचा वाला रस्ता पर एगो आदमी देखाई देलस। दूर, ढेर दूर से समसुनरी के अतने बुझाइल कि अवनिहार के हाथ में आउर कान्ह पर समान बा आ ऊ बाहर से आवत बा। बाकिर अवनिहार के पाछे, कुछ दूर पर एगो मेहरारुओ चलल आवत रहे। ई कवन मेहरारू अिह ? समसुनरी के ना बुझा पाइल। होखी कवनो गाँव के दोसर मेहरारू। समसुनरी कबो घर में जाए आ फेर तुरंत बाहर आ जाए। खुशी के मारे ओकरा ना बुझात रहे कि ऊ का करो। ऊ पागल लेखा भ गइल रहे।

जब अवनिहार नजदीक आ गइल त समसुनरी देखलस कि बुढ़िओ के मँझिला बेटा हवन। पाँच दिन पहिले कलकत्ता से चलल बाड़न। अपना ससुरारी से होली मनावे खातिर मेहरारू के ले ले आवत बाड़न। ई देख के समसुनरी के करेजा पर साँप लोट गइल। ओकर दुलहा ना आइल रहस।

ओकर खुसी छन भर में बिला गइल। ऊ बहुत दुखी भ गइल। जब रात भइल त बुझाए कि पहाड़ आ गइल होखे। रात कटले ना कटात रहे। केहू के माटी उठला पर जइसन बुझाला, समसुनरी के ओह रात अउसने लागत रहे। ओठंगत, करवट बदलत कहइसहूँ रात काट के भोरे उठलस त बुझाए कि ऊ कहिआ के बीमरिआ होखे। होली के मनहूस भोर ओकरा खातिर पहाड़ लेखा दिन लेके आइल।

एने-ओने के कुछ काम ओरवला के बाद समसुनरी के ओकर सास बोलवलीं। रात दुलहा किहवाँ से जे सौगात आइल रहे, ऊहे देवे खातिर बोलवले रहस। तेहरी साड़ी, तेहरी बलाऊज आउर तेहरिये टुकड़ा। सब एके लेखा। एकहक गो साड़ी, बलाऊज और टुकड़ा समसुनरी के मिलल। बाकी समान दूनो सास में बंटा गइल।

समसुनरी के सब समान कटावन लागत बा। ऊ सोंचत बिआ, का हम कमात नईंखी ? हमरा के ई सब समान फुसलवनी भेजले बाड़न ? लूगा-कपड़ा कीने लायक त हमार मेहनत आ मजदूरी से मिलल मुनाफे के चार आना ढेड़ बा। - - -हुँह, बुझाता कि हम इनकर कपड़ा बिना ईहवाँ लंगटे बानी ! ऊ बुदबुदात बिआ - का एही खातिर मरद होखेला ? आउर लोग के मरद नईखे का ? ओकनी के कलकत्ता घर-दुआर भ गइल बा। एगो ई बुधुआ भेंटाइल बाड़न - - - - कलकत्ता के परदेसी बना दिहल गइलन। - - - - ओकर दूनो देवर डेढ़ साल में चार-पाँच बेरा घरे आ चुकल रहस। बाकी ई बाड़न कि गइला के बाद से आवे के नाम पर दू बेरा चिठी आ लूगा-कपड़ा भेज देले बाड़न।

घर में सभे होली मनावे में लाग गइल बा। दुपहरिआ

होते-होते रंग से अँगना बरसात लेखा किच-किच भ गइल। लेकिन समसुनरी 'माथा दुखाता' कह के रंग से दूर रह गइल बिआ। गाँव के ननद आ गोतनी कहाए वालिन के अब तकले तीन गो जमात आ चुकल बा। आ समसुनरी चउका में सास के हुकूम के मोताबिक पकवान छाने में अप. ना के सउनले बिआ। हाथ काम कर रहल बा आ बिचार के घोड़ा कहँई तेजी से धउर रहल बा।

"तू रंग ना खेलबू का हो ?" माथा दुखाइल सुनिओ के सास पूछली। सास बूझ गइल रही कि ई माथा के दरद ना करेजा के टीस ह, जवन अपना बेकत के ना अइला से घवाइल होके आउर बढ़ गइल बा। सास बोलऽ तारी, "रामअयोध्या कहत बाड़न कि उनका छुट्टी ना मिलल ह। हाले जे तरक्की भइल बा नू एही से तुरंत छुट्टी ना मिल पाइल ह। ई त कहऽता कि ऊ आवे खातिर छटपटा के रह गइल। बाकिर - - -।"

अतना सुन के समसुनरी के करेजा में बईठल चोर आँख से हो के निकले लागल। ऊ जोड़-जोड़ से रोवे लाग. ल। आँख से झड़-झड़ लोर टपके लागल।

"बड़की, ते रो मत ! रोअत काहे बारे ? तोर मरद त परदेस नू गइल बाड़न, परमिलवा के मरद लड़ाई में गइल बा। तोर मरद त ऊहवाँ ठीक से आपन रोज के काम में लागल बाड़न, बाकिर परमिलवा के मरद के खाए के त छोड़, जान के ठेकाना नईखे कि कब अपना देश पर निछावर हो जईंहन। बाकिर ओकरा के देख तऽ।" परमिलवा बगल घर के पतोह हिआ।

समसुनरी अब चुप भ गइल। बाकिर ऊ सोंचत बिआ कि हमार मरद जदि लड़ाई पर गइल रहतन त का हम रो-रो के ढेबुआ लेखा आँख आ पुआ लेखा गाल कर पईंती। हूँह, लड़ाई पर ? ई का लड़ाई पर जईंहन ? कलकत्ता त एगो संभरते नईखे आ लड़ाई पर जईंहन ! अबहिंओ ओकरा आँख के लोर कोना में चिपकल बा, लागऽता जइसे कवनो कोटर से चिड़ई झाँकत होखे।

"ए दुलहिन - - - -" अबहीं सास कुछ कहे के चाहत रहली कि दुआरी पर फेर एगो जमात रंग खेले आ गइल। एह जमात में बुढ़िआ लोग जादे बा। सभनी मिल के बुढ़िओ के रंग से पोत दिहलस। कमली के नज़र समसुनरी पर पड़ गइल। पड़ोस के ननद ठहरल। धउर के रंग में गोत देवे के चहलस। बाकिर समसुनरी छिटक के रंग से बच गइल। सब रंग पुआ के घोरल आँटा में छितरा गइल।

रंग में पोता-पोती अबहीं चलते रहे कि दुआरी पर एगो मरद आ गइल। ओह मरद के देख के अँगना में होखत रंग के खेल रुक गइल। लोग ठसक गइल। दुआरी पर अवनिहार मरदाना के पूरा मुँह सतरंग से पोताइल बा।

अवनिहार पर सबसे पहिले समसुनरी के सास के नज़र पड़ल रहे। उनकर बड़का बेटा हवन, सुरेशवा के बाबू, समसुनरी के - - - -। मतारी से नज़र मिलते ऊ सीधे भीतर घुस के गोड़ छू के परनाम कईलन। बगल में ठाड़ समसुनरी पर उनकर नज़र चल गइल। नज़र चार होअते समसुनरी के बाँछा खिल गइल। ऊ लजा गइल। माथा पर लुगा ठीक करके मुँह घुमा लेलस।

मवका देख के सुरेशवा के बाबू समसुनरी के गोर गुलाबी, होली के दिन भी कोरा रह गइल गाल पर अपना हाथे रंग चभोथ दिहलन।

रात खानी दुआरी पर गाँव के लोग बईठत गा रहल बाड़न। ढोलक-झाल पर होली गवा रहल बा। साँझी खानी के चलल भाँग अब आपन रंग देखावल शुरू कर देले बा। लोग झूम-झूम के गा रहल बा। 'राम खेलस होली लछमन खेलस होली - - - - ' से शुरू हो के होली अब भउजी के लाल-लाल गाल पर शोभे लाले हो गुलाल - - - -' पर आ गइल बा।

समसुनरी केंवारी के ओट से ठार सब देख रहल बिआ। सुरेशवा के बाबू झाल लेके झूम रहल बाड़न। समस. ुनरिओ के जुबान पर धीरे-धीरे होली के गीत तयरे लागल बा। ऊहो बिना निसा के झूम रहल बिआ। ओकरा जिनिगी में पहिले-पहिल अइसन खुसी के दिन आइल बा।

गाँव में दूर-दूर से अवाज आ रहल बा, 'होली-हो, होली-हो - - हो-ओ - - - -।'

❖ ❖ ❖

❍ 8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010
मो0 62049 46844

अपनापा

डॉ रजनी रंजन

फगुनहट के सुगंध गाँव में उतर चुकल रहे। महुआ टपकत रहे आ हवा में भींजल मिठास घुलल रहे। रामदास के घर के आँगन में चूल्हा दहकत रहे। कड़ाही में पुआ फूल–फूल के उठत रहे जवना के रामदास के कनिया आँचल सम्हारत उलट–पुलट करत रहली। रामदास के पत्नी सीता खूब गोर,हँसमुख आ मेहनती रहली जेकरा कारण सबके मन में उनकर खास जगह बन गइल रहे। रामदास, सादा मन के किसान रहले पर होली उनकर खास परब रहे।

पुआ छानत कनिया के दुआर के ओहँगन पर खड़ा होके मुस्कुरा के देखत रहलन आ नजर पड़ते धीरे से कहले –"एतना पुआ बनइबू त गाँव भर जुट जाई,"।

सीता आँख तरेर के बोली, "होली में कंजूसी शोभा देला? पहिले पेट रंगाई, फेर रंग भा माटी।"

एही बीच रामदास के छोट बहिन गीता, चंचल स्वभाव वाली, अपना जीजा सुरेश के साथ पहुँचले। सुरेश मजाकिया मिजाज के आदमी रहे। दुआर पर पहुँचते ही ऊ गीता के छेड़ दिहलनकृ

"देखऽ साली, तोहार भउजी त आज हमरे खातिर पुआ बना रहल बाड़ी।"

गीता खिलखिला उठीकृ"रउरा खातिर? पहिले कारण बताईं, तब पुआ पर हक जताईं।" ऊ कहलन– काहे से कि जइसे हमरा पुआ पसंद बा ओइसहीं पुआवाली भी खूबे पसंद बाड़ी।

एह हँसी में सीता लजा गइली, आ रामदास अपना पत्नी के ओर देख के गदगद हो उठले।

साांझि बेरा गाँव में ढोलक पर फगुआ गूँज रहल रहेकृ

"फगुआ में गइनी जे लजाईं सजनवा,
रंग फीका पड़ी जाई"।

रामदास घर के जिम्मेवारी के चलते ना पढलन। तीनों भाई बहिन पढ़े में खूब तेज रहलन। रामदास अपना छोट बहिन गीता आ सीमा के शहर में नाम लिखवा दिहले रहले। दुनो बहिन के वजीफा मिलत रहे एह से पढावे में ढेर दिक्कत ना भइल। एही बरीस सीमा के पढ़ाई पूरा भइल त सुरेश से बिआह भइल। काहे कि ऊ सुरेश के पसंद रहली।सुरेश सीमा के साथही रख के नौकरी खातिर तैयारी करावत रहलन।

पहिल संवत के खातिर ई दूनो जन के बोलावल गइल रहे।

सीमा आ गीता गाँव जब आवे लोग त पर्यावरण के प्रति गाँव में लोग से जागरुकता ले आवे खातिर बात करस। एह बार रंग के मिलावट के कारण होवे वाला बिमारी पर चर्चा भइल। गाँव के बड़का बाबा कहलन– ई रंग आ रंगबिरंगा अबीर त अब आइल ह। हमनी त पहिले माटिये से रंग खेलत रहीं। त उहे होई।

ए साल गाँव के बुजुर्गन के सलाह पर रंग कम आ माटी से होली खेले के तय भइल रहे। पोखरा किनारे भींजल माटी के ढेर बना के रखल गइल रहे त नदी के किनारे गड़ही बना के। खूब जमल अबकिर होली।

सब एक–दूसरा के गाल पर माटी मलत, हँसत, गावत रहे।

ओही भीड़ में रामदास के छोट भाई के मेहरारू सरिता खड़ी रहली। साँवरी रंग आ गंभीर स्वभाव वाली सरिता के आँख में अधूरापन झलकत रहे। उनकर पति कमाई खातिर शहर में रहलन आ ए बार होली में ना आ पवलन। जीजा–साली के ठिठोली देख के ऊ मुस्कुरा त देत रहली, बाकिर भीतर कहीं कसक उठत रहे।

घर लौटला पर उनकर दूनो नन्हकी बिटिया माटी सने हाथ से छू देली।

सरिता झल्ला उठली–"दिन भर उधम! कुछ सुघराई सीखऽ लोग!"

बिटिया सहम के चुप्प हो गइली।

इ दृश्य देख के घर के सबसे बुजुर्ग बड़की दादी, झुर्रीदार चेहरा आ तेज नजर वाली, लाठी टेकत आगे बढ़ली।

"छोटकी," दादी कड़की आवाज में बोलीं, "मन के दुख बच्चन पर मत उतारऽ। होली के दिन घर में रोआ–धोआ ठीक ना होला।"

सरिता के आँख भर आइल। "दादी, ए घड़ी ऊ आ जातें ..."

दादी नरम पड़ गइली। "बेटी, आदमी तऽ दूर अकेले बा, बाकिर तोहार घर, तोहार बच्चा, ई माटी–सब त तोहरे साथ बा।"

साँझ होते–होते आँगन में पुआ–पूरी के थार सज गइल। दही–बड़ा के खुशबू फैल गइल। ढोलक पर फिर गीत उठल। रामदास धीरे से सीता के पास आके कहले– मटिया फेंकनी हऽ आ ऊ

तहरे पर लागल ह ,बुझलू ह काहे। हम तहरा के देख के..... कहते आउर लगे आके धीरे से कहले – "तोहरा संगे हर होली नयके लागेला।"
सीता मुस्कुरा के बोली–"त माटी के ई रंग कबो सू खे मत देहब।"
सरिता दूर से ई स्नेह देखत रहली। बिटिया लोग हँसत–दौड़त उनका आँचल से लिपट गइली। सरिता एह बेर डँटली ना, बस चुपचाप गले लगा लिहली।
बड़की दादी आसमान निहारत बुदबुदइली–
"रंग उड़े ला, गुलाल सूख जाला... बाकिर अपना माटी में मिलल अपनापा सदा जिंदा रहेला।"
ओह दिन गाँव में रंग सचमुच कम उडल, माटी जादे लागल। पुआ के मिठास, गीत के गूँज आ मन के मेल–एही में होली के असली रंग चमकल।

❑❑

❍ राँची, झारखंड

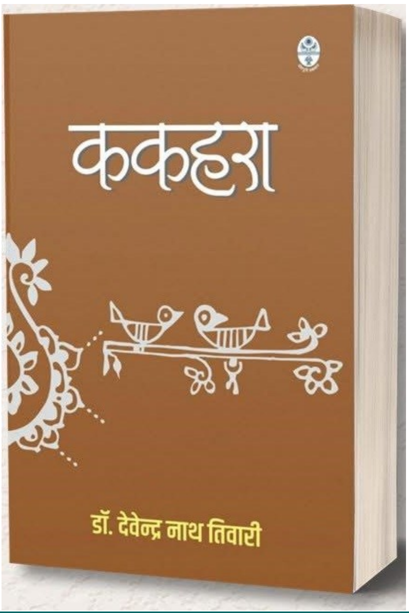

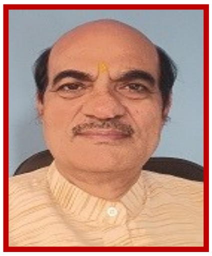

भइया फागुन आय गइल!

डॉ शंकर मुनि राय "गड़बड़"

चलल बसंती फेंक दुपट्टा, अमवों बउराइल ।
भउजी देंह अँइठली भइया फागुन आय गइल।

गाँठ परल तीसी के मन में माथ भइल भारी
झूमत निकलल सरसोइया भी मारत सिसकारी
बात बुझाइल तब, जब लउकल मँगिया पियराइल....
भउजी.... ।

प्रीति के पाहुन भंवरा बनि करके लगले मंडराए
याद परल बीतल जिनिगी, सासू लगली मुसुकाए
सरहज नयन चलवली सउंसे देह छुवाय गइल....
भउजी–––!

मेहर छान तुरावे रोजे, रोज बढ़े परेसानी
पाठ करत पत्नी चालीसा बीतल कुल्ह जवानी
"गड़बड़" बात बनल जब घर में साली आय
गइल–––भउजी–––!

❑❑

❍ विभागाध्यक्ष–हिंदी/शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

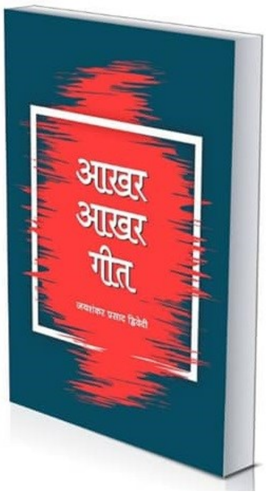

दू गो गीत

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

फगुनवा आइल बा दुअरे

बिला रहल होली के सगुनवाँ
फगुनवा आइल बा दुअरे।
आइल बा दुअरे हो, आइल बा दुअरे
फगुनवा आइल बा दुअरे॥

तिसियो ना गोटाइल ना पोढ़ाइल मटरिया
पछाड़ भइल सरसो, बन्हाई ना गठरिया
रहरी के छिमिया बजावे ना घुघुनवा,
फगुनवा आइल बा दुअरे।

गेहूँआ के बलियो बा मुँह लटकवले
जउवा आ रहिलवा ना चहका सुनवलें
खेसरियो अब ना माने कहनवाँ,
फगुनवा आइल बा दुअरे।

चच्चा के ढोलकी ना बाजे चउपलवा
असों जेपी भइयो ना मिलावेलें तलवा
बेर बेर सजनी तकेले सजनवाँ,
फगुनवा आइल बा दुअरे।

आइल बा दुअरे हो, आइल बा दुअरे
फगुनवा आइल बा दुअरे॥

❑❑

दुआरी पर फागुन

सरसोइया मारे सिसकारी
दुआरी पर फागुन खड़ा।

कोइल के बा अँगना अमरइया
रहरि क बजत पयलिया जोगइहा
तिसिया निहारे कियारी
दुआरी पर फागुन खड़ा।

ललका परसवा दिन रात दहके
गोरी क गाल देखत मन बहके
महुआ चुवे महुवाबारी।
दुआरी पर फागुन खड़ा।

गेहुआँ क सउंसे देह पिराले
छम छम बजि मंटरियो इतराले
भउजी क अँचरा निहारी।
दुआरी पर फागुन खड़ा।

बिनु साजन का सजनी के हियरा
फागुन भइल बा जेठ के दियरा
बिरहिन के नीनि उजारी।
दुआरी पर फागुन खड़ा।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

भोजपुरी गीतन में होली वर्णन

डॉ ब्रज भूषण मिश्र

भोजपुरिया धरती उत्सवधर्मी धरती ह। भोजपुरिया लोकजीवन मुख्य रूप से खेती–किसानी पर आधारित बाटे ना, त मेहनत मजदूरी पर। भोजपुरिया लोकजीवन के हर एक परब त्योहार कृषि से जुड़ल बाटे। एह त्योहारन में होली–फगुआ के त कहहीं के का बा?घर के कोठिला में ध ाान–चाउर भरल रहेला, बधार में गेहूँ गदरात रहेला, आम–महुआ मोजरात रहेला आ सरसो पिअर रंग फुलाए लागेला,त समझीं बसंत आ गइल बा। किसान–मजदूर दे ख–देख हरखित होला आ बसंत पंचमी से शुरू होखे वाला होरी के उत्सव अबीर खेल के शुरू करेला आ लगभग चालीस दिन तक एह त्योहार आ उत्सव के होरी–फगुआ गा के मनावत रहेला। जब बधार में गेहूँ सोना अस पिअराये लागेला,तब होलिका दहन खातिर सम्बत फूंकत, अगजा करत,धुरखेल करत रंग उड़ावेला, होरी, धमार, जोगिरा, कबीर गावत अपना उमंग उछाह के प्रकट करेला। आ तब जाके एह त्योहार के विराम दिआला।

ढ़ोल झाल–डफ–मजीरा के ताल पर गावल जाय वाला होरी गीतन के आपन अलग लोक लय बा। गीत सुनते केहू कह–बता सकत बा कि ई होरी गवाता, फगुआ गवाता। रोज रात के चउपाल में भा कवनो सार्वजनिक स्थ. ान पर फगुआ के गीत गूंजेला। अगजा के दिन ओही जगह पर फगुआ गवाला जहवाँ होलिका दहन कइल जाला। फगुआ के दिन सबेरे अगजा के जगह से धूर आ अगजा के राख उड़ावत राहे–राहे फगुआ–जोगिरा–कबीर गावे के प्रचलन रहल बा। साँझ के माई स्थान, ब्रह्म स्थान चाहे मंदिर से फगुआ गावल जात रहल ह आ रंग–अबीर उड़ावत दुअरे–दुअरे गवात रहल ह। धीरे–धीरे ई प्रचलन खतम भइल जा रहल बा। अधरतिया ले आखिरी घर तक फगुआ गाके चौता गावल जात रहल ह, तब जाके ई त्योहार पूरा होत रहल ह।

होरी गीतन में निरगुन–सगुन, शैव–वैष्णव–शाक्त सबका भावना के आदर करत सबके सुमिरन त कइलहीं जाला, शिव–पार्वती,चारो भाई राम आ सीता आउर कृ ष्ण–गोपी के होली खेलला के वर्णन वाला गीत गा के पौराणिक प्रसंगन के स्मरण कइल जाला। होरी गीतन में इतिहास आउर राजनीतियो का प्रसंग पर गीत आधारित होला। बाकिर होरी गीतन में श्रिंगार, हँसी,ठिठोली आ मधुर संबंधन के व्यक्त करे वाला गीतन के संख्या बेसी बाटे। बहुत गीत अश्लीलों बाड़न स। हलांकि होली के त्योहार अइसन बा कि अश्लील गीतन के जरिये विकार बहरिया जाला आ मन निर्मल हो जाला।

लोक से लेके शास्त्र तक में होली के रंग मौजूद बा। संत कवियन से लेके आधुनिक कवियन के रचना तक में होली के ई रंग मिलेला। जोगिरा आ कबीर में हास्य–व्यंग के प्रधानता देखाई पड़ेला। होली गीतन में समाज के मस्ती का अभिव्यक्ति मिलेला।

होली का गीतन के रस परम ब्रह्म के गीतन से प्रवाहित भइल शुरू होला। फगुआ गावे वाला एह त्योहार में ब्रह्मा के सहायता मांगत गावेला–

बरहमा होखीं ना सहाय
एही जगहिया के बरहमा

सीवान जिला के मैरवा नामक जगह पर ब्रह्म के स्थान बा, उनकर सुमिरन दोसरो जिला के लोग करेला–

हरिराम ब्रह्म रउरा पइयाँ पड़ीं
हो मैरवा में धूम मचे।

अइसहीं आदि शक्ति भवानियों के सुमिरन कइल जाला–

हम अइनी तोहरी सरनियाँ हो माता
मोरी पत राखे हे जगदंबा

इज्जत–हुरमत राखे खातिर गोहरावत आदि शक्ति से आन्हर खातिर आँ ख,कोढ़ियन खातिर काया आ बाझिन औरत खातिर लइका के मांग कइल जाला–

अन्हरा के आँखि, कोढ़िया के काया
बाझिन के पूत दीहे महामाया

अब देखी कि शंकर भगवान के दरबार में होरी के धूम मचल बाटे–

शिवशंकर के दरबार
होरी धूम मची हो

शिव बाबा के देवल पर फागुन में अबीर उड़ रहल बा–

हे सिव रउरा देवल में
फागुन के उड़त अबीर

डमरू बजा–बजा शिवशंकर सती के संगे फगुआ खेल रहल बाड़ें। उनकर सवारी बैल नाच रहल बा–

सिव–सती खेले फाग,आहो लाला
नाचत बएल, बजावत डमरू
सिव–सती खेले फाग

बनारस के होली बड़ा मशहूर ह। इहाँ का होली के आपन मस्ती बा। बाबा बिश्वनाथ इहाँ निवास करेलें। ऊ इहाँ अइसन ढंग से होली खेलत बाड़न कि

कैलास लागे लागल बा–
होली खेले बिसेसर नाथ
कासीपुरी कैलास बने।

बनारस के गलियन में सिव हँस–हँस के होरी खेलत बाड़न आ साथे भैरव आ आउर गन लोग बाड़ें–

हँसि–हँसि सिव खेले होरी
ऐसो विदित बनारस के खोरी
भैरव आदि सकल गन मिली के
अबीर लिए भर झोरी

अब रघुबंसी राम के होली बरनन देखिन। ऊ अवतारी रूप ना, एगो साधारण मनई के रूप में देखावल गइल बाड़ें। ई लोक के शक्ति आ श्रद्धा बा कि ऊ अवतारियो व्यक्तित्व के अपना अइसन समझेला। संत लक्ष्मी सखी लिखल गावल गीत देखीं–

होरी खेलत अवध रघुबीरा
काया अवध सरजू नदी तीरा, जहां संतन के भीरा
हाथु पिचकारी माथे सोभे चीरा
संग सखा लिए ढाल मजीरा
उठत गह–गह गगन गम्हीरा
सुनि–सुनि संत भए धीरा
चलु सखि, चलु जे मेटेला भवपीरा
देख–देख दसरथ बीरा

राम जी चारो भाई सरजू के तीर पर होरी खेलत बाड़ें। गीत देखीं–

सर जुग का तीर
होरिया खेलें चारो भइया
रस रंगन धूम मचाये रसिया

राम जी होली के अवसर पर अपना ससुरारी जनकपुर में बाड़न। फेर कबों उनका आवे के मोका मिली कि ना, एही से घोषणा हो रहल बा–

खेलहु रंग बना इ के हो
फेरु नाही राम जनकपुर अइहें।
राम जी के पगिया रंगा द सइयाँ
फेरु नाही राम जनकपुर अइहें।

ब्रज के होली के आपन रंग बा। बृजनन्दन कृष्ण उनका सखा–सहेली गोप–गोपियन के होली त विश्व प्रसिद्ध बा। कृष्ण आ गोपियन का बीच के मधुर संबंध के पता एह गीत से चल रहल बा–

भींजे हमरी चुनरी हो नंदलाला
डारहु केसर पिचकारी जनि हाँ हाँ मदन गोपाला
भींजल बसन, उघारो अंग अंग बड़ निरलज ई लाला
रसिक बिहारी छैल मनमाना बढि गयो मोर जंजाला

गोपी कृष्ण से गोहार लगा रहल बाड़ी–

लाख रूपइया साड़ी ओ लंहगा
साड़ियो लहंगवा रंगवा में
जनि बोर हो कन्हैया।

कन्हैया गोपी के कलाई पकड़ के रंग लगावे के चाहत बाड़न। पातर चूड़ी टूटला का डर से ऊ गा उठत बाड़ी–

पतरी चूरी हो कन्हैया
बहियाँ जनि मोरे

कान्हा अइसन पकिया रंग बृजवासिन पर डलले बाड़न, जवन छोड़वले छूटे के नइखे, एही से उनका मीठ–मीठ गरियो सुने के मिलत बा–

कवना रंगवा में बोरले कन्हइया
लाखन गारी होला बिरिज में

रंग खेलत–खेलत कन्हइया राधा के मंडप में पहुँच गइल बाड़न। सखी लोग राधा से रंग अबीर तइयार करे के विनती कर रहल बा–

राधे घोरे ना अबीर
माँड़ो में अइलें कन्हइया

बृज के होरी के त बाते का बा? रंग–अबीर–गुलाल के बेसी खरच त एही जगही होला–

जहां होला अबीरन मारि
बिरज में भूलि गए नंदलाल
नौ मन रोरी घोरी बिरज में
दस मन उड़त गुलाल

अब होरी गीत में कुछ इतिहास के बात देखीं। गुलामी के दौरान आजादी आ उन्नति खातिर आम जनता का एकता के जरूरत बुझाइल, जवन होरी गीत में अभिव्यक्त भइल। आजों एह एकता के जरूरत बुझा रहल बा–

खेलहु सभ मिली भाई
नीच–ऊंच अउर भेद भाव के
देहु आज भुलाई
बैर कपट छल त्याग हिया से
फूट के फूट हटाई
द्वेष के दूर भगाई

गुलामी के दौरान देह मुरुछा में रहे। जान जाये के नौबत बनल रहे, ओइसे में भला होरी खेले के मन कर सकत बा–

भारत दुखित होई नटवर से विनय करे करजोरी
धावहु नाथ बचावहु अब त होली में जान गयो री
फाग अस नाहि खेलो री।

जब 1857 ई0 में कुँवर सिंह अंग्रेजन के आरा में परास्त कइलन त धूम–धाम से होली मनावल गइल–

बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर
बंगला पर उड़ेला अबीर
आहों लाला बंगला प उड़ेला अबीर

चंपारण के इलाका में अंग्रेज लोग किसान लोग खातिर नील के खेती करे खातिर कानून पास कइले रहे। एह बात के होरी गीत में उठावल गइल बा–

मोरा पिछुअरवा लीलवा के खेतवा
बलमुआ हो, लील रंग चुनरी रंगा दे
लीलवा के चुनरी के जाड़ो नाहि गइले
बलमुआ हो, सलवा दोसलवा ओढ़ा दे

बाकिर, नील रंग में चुनरी रंगावल जनता का नीक नइखे लागत, एह से आजादी दिआवे वाला देशप्रेमी रंगरेज के खोज काइल जा रहल बा–

मोर बलमुआ हो, लीलवा चुनरी रंगावे
लील में के चुनरी मोरा मन नाही भावे
सइयाँ हो पटना से रंगरेजवा बोला दे

पौराणिक–ऐतिहासिक होरी गीतन के अल. ावे रूप–सिंगार, ननद–भौजाई आ देवर–भौजाई के हँसी ठिठोली वाला होरी–फगुआ के संख्या हजारन में बा। एकर प्रचुरता बा–

गोरी के काजर लागल आँख के बड़का फाँक लोग के आँख में अंटकत बा –

हे गोरी तोहार बड़ी–बड़ी अँखिया
नैना कजरवा सोभेला

गोरी के केश लाम–लाम बा, बिना ककही कइसे झराई , बालम ककही नइखे ले आइल –

ककही ना लइले हो बालम
कइसे झाड़ी लामी केश

अब देखीं भउजाई कइसे ननद से ठिठोली करत बाड़ी –

होली खेलन अइहें मोर ननदोइया
केसिया सँवार जुड़वा बान्ह हे ननदिया
आवत होइहें घरवा मोर ननदोइया

अब लहुरा देवर के देख के तनि भउजाई के क्रिया कलाप देखीं–

देवरा के देखते अंगनवा हो
झमकि भउजो बान्हे चोली बनवा

भोजपुरी के आधुनिकों साहित्यकार लोग बसंत आ होरी पर कलम चलवले बा। दू–तीन गो उदाहरण देखल जा सकत बा–

रंग के त्योहार में भोलानाथ गहमरी का सब कुछ रंगाइल देखल जा सकत बा–

पोर–पोर मन सहज रंगाइल
जागल हिया उमंग में
ओठन से ओठन के लाली
लसे लिपटि के अंक में
छंद–छंद लय–ताल पर गूंजल गीत सिंगार के

फगुआ गवला के जरूरत पर अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी लिखले बानी –

फगुआ गा के गतर गतर के कठरल रग गरमावे
ढोलक झाल मजीरा जवरे तन मन मस्त बतावे
नगर में धूम मचाव

फागुन का दिन के पता गंगा प्रसाद 'अरुण' का कइसे लागल देखीं–

मन मातल मदमस्त भइल, मधुआइल हो
अइसन लागत बा फिर फागुन आइल हो

एह प्रकार से पता चालत बा कि भोजपुरी गीतन में हर तरह के रंग उड़त–छिटांत दिखाई पड़त बा, मस्ती दे खाई पड़त बा, सामाजिक चिंतन देखाई पड़त ह।

❑❑

❍ **मुजफ्फरपुर , बिहार**

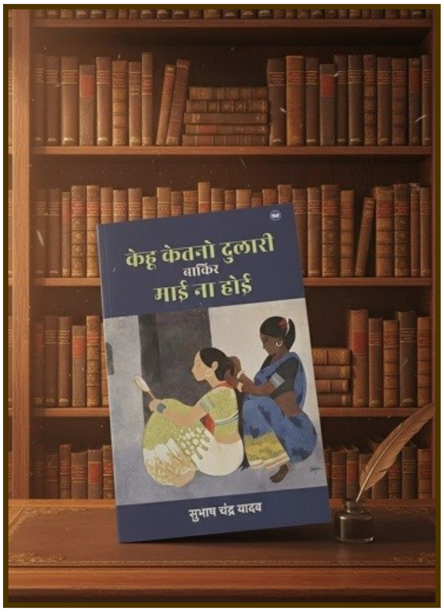

भउजी देह अंइठली अउरी फागुन आय गइल

मनोज भावुक

फगुआ! आहा! चांद–तारा से सजल बिसुध रात छुई–मुई लेखां सिहरता. सोनहुला भोर मुसुकाता. प्रकृति चिरइन के बोली बोलऽतिया. कोयल कुहुक के विरहिनी के जिया में आग लगावऽतिया. खेत में लदरल जौ–गेहूं के बाल बनिहारिन के गाल चूमऽता. ठूंठो में कली फूटऽता. पेड़ पीयर पतई छोड़ हरियर चोली पहिर लेले बा. आम के मोजर भंवरन के पास बोलावऽता. कटहर टहनी प लटक गइल बा. मन महुआ के पेड़ आ तन पलाश के फूल बन गइल बा. हमरा साथे–साथ भउजी के छोटकी सिस्टर भी बउरा गइल बाड़ी. माधो काका भांग पीके अल्ल–बल्ल बोलत बाड़न. ढोलक, झाल–मंजीरा के संगे सिन्हा चाचा के गोल दुआरे–दुआरे फगुआ गावऽता. बड़की भउजी हफ्ता भर पहिलहीं से जहां ना रंगे के ओहू जी रंग देत बाड़ी. माई माथा पऽ अबीर लगा के मुंह में गड़ी–छुहाड़ा डाल देत बिया आ जुम्मन चाचा सीना से लगा के होली के शुभकामना देत बाड़न.
तले भक्क से आँख खुल जाता. सपना टूट जाता, गाँव वाली होली के सपना.

हम दिल्ली में बानी आ हमरा आँखी का सोझा पसरल बा भोजपुरी के पचासन कवि के फगुआइल रचना. ओह में फागुन के किसिम किसिम के सीन लउकता.

हास्य–व्यंग्य के सिद्धहस्त रचनाकार डॉ. शंकरमुनि राय ''गड़बड़'' जी कहतानी –

चलल बसंती फेंक दुपट्टा अमवां बउराइल
भउजी देह अंइठली भइया, फागुन आय गइल

प्रीत के पाहुन भंवरा बन करके लगले मंड़राये
याद परल बीतल जिनिगी, सासो लगली मुसुकाये
सरहज नैन चलवली, संउसे देह छुवाय गइल
भउजी देह अंइठली भइया, फागुन आय गइल

तले भक्क से हमरा आपन साली ईयाद पड़ गइली. हमार एगो फागुनी दोहा बा –

साली मोर बनारसी, होठे लाली पान
फागुन में अइसन लगे जस बदरी में चान

बनारस (चंदौली) ससुराल ह हमार. बनारस के बात चलल त बनारसे के एगो कवयित्री हईं सरोज त्यागी. जनकवि कैलाश गौतम जी के बेटी हईं. उनकर फगुआइल कविता हव कि –

सनन सनन बोलै पुरवाई, हँस–हँस खीचौ अंचरा
माथ टिकुलिया, गाल पे लाली आंखिन सोहै कजरा
जे जे देखलस रूप लोभावन ऊहे घायल हौ
गावा फाग जोगीड़ा गावा फागुन आयल हौ

बनारसे के एगो कवयित्री हईं मंजरी पांडेय. राष्ट्रपति से सम्मानित हईं. फाग के बारे में कहत हईं कि –

मद से मातलि ह एकर नजरिया
बचौ पावै नाही एको गुजरिया
अँचरा खींचे रस भींजे मञ्जरी के
मन लुभावेला बसंत कंत ई बटोहिया।
रहि रहि मोरि रहिया रोके ई बटोहिया
फूलगेनवा से हैं मारे ई बटोहिया

ओही बनारस के लोकप्रिय कवयित्री हईं डॉ. सविता सौरभ. सविता जी के मनवा में साध–सपना के गंगा फफाइल बाड़ी–

फगुनी बहेले बेयरिया हो,
पिया ला द चुनरिया।

होरी के दिनवा नगीचे बा आइल
मनवा में सधिया के गंगा फफाइल
जयपुर के चाहीं लहरिया हो
पिया ला द चुनरिया

छपरा के कवि प्रणव पराग मरद होइयो के नारिये मन के साध कहत बानी–

चढ़ते बसंत पिया बहरा से अइहे
फगुआ में ललकी चुनरिया ले अइहे
फेरु पीरीतिया फुलाई फगुनवा में
हम डालब रंगवा गुलाल तू लगइहे
सजना फगुनवा में जनि बिसरइहे...

देवरिया के कवयित्री आ हास्य कवि बादशाह प्रेमी के पत्नी माधुरी मधु के सुनीं –

फुलवा डाले डाल फुलाइल
भंवरा झूमि झूमि मंडराइल
पपिहा पी–पी करेला, पुकार सखिया
अबही अइले न सजना हमार सखिया

हास्य कवि बादशाह प्रेमी अपना हिसाब से फागुन के परिभाषित करत बानी –

बिरहिन कवनो अँचरा खोले
जब मुंडेर पर कउवा बोले
जब परदेशी लवटे घरे,
जब देखनहरू खाहुन करें
जब धुरा में आग धरेला
गरमी जब छितिराइल बा
तब जनिहऽ भउजी मनमौजी
फागुन के दिन आइल बा

मुजफ्फरपुर के कवि आ फिल्म गीतकार कुमार विरल जी प्रकृति आ फगुआ के समीकरण बतावत बानी–

सोना से सुनर देहिया धरती दुलारी।
सातो रंग घोरी केहू मारे पिचकारी।।

गेहुआँ गुमाने झूमे गदरल जवानी,
तिसिया के झुमका झुलावत बारी रानी,
सरसों के पियरी पहिर लेली सारी।।

चंपारण के कवि अखिलेश्वर मिश्रा फगुआ के मन से कनेक्शन मिलावत बानी–

ई मौसम ह प्रेम प्रीत के, ई मौसम ह राग गीत के
राग बसंती गूँज रहल बा, लेके अब उल्लास
प्रिये देखे आइल मधुमास...

युवा कवि संतोष भोजपुरिया दिल्ली–मुंबई के प्रवासियन के आवाज बनी के बोल रहल बाड़न –

फगुआ के लुटे के लहरवा हो, चले यूपी बिहरवा
यूपी बिहरवा हो, यूपी बिहरवा
छुट्टी लेके चलल जाव घरवा हो
चले यूपी बिहरवा

गाजियाबाद के कवि जेपी द्विवेदी बसंत के दुलहा बतावत कहत बानी –

मन के तार से छुवइलें, बसंत दुलहा
सखि मोरे दुअरे अइलें, बसंत दुलहा

वरिष्ठ गीतकार संगीत सुभाष बसंती आगमन के लक्षण बतावत बानी –

पसरल सरेहे हरियरी, बसंती आगम जनाता
गोरी बेसाहेली चुनरी, बसंती आगम जनाता

मोंजरि का अँचरे लुकाइल टिकोरा
तितली कुलाँचेले भँवरा का जोरा
मांगेली नगवाली मुनरी, बसंती आगम जनाता

वरिष्ठ, सशक्त अउर सुकंठ कवि भालचन्द त्रिपाठी के अद्‌भुत गीत बा –

सुधि के दियना जरा गइली फागुन में
पीर बाढ़लि डेरा गइली फागुन में

हमरे प हक सबकै जिउ सुनिके सुलगे
देवर के अलगे त बाबा के अलगे
हम त अइसे ओरा गइली फागुन में

चाहे एगो अउर गीत ...

अंग अंग मोर अंगराइल हो
जनो फागुन आइल
कंगना न मानेला खन खन खनके
असरा फुलाए लगल फिर मन के
भउजी के टिकुली हेराइल हो
जनो फागुन आइल

बनारस में झगरू भईया के नाम से लोकप्रिय कवि लालजी यादव के कविता सुनीं –

आम में बउर टिकोरा लगी
भलहीं महुआ महुआरी चुवाई।
पीपर ताली बजाई भले
भलहीं बरगद ई बरोह झुलाई।
नंद के नंदन हे यदुनंदन
चंदन भी त सुगंध लुटाई।।
जाना बसंत में अइबा न तूँ

रेनुकूट, सोनभद्र के सुकंठ गीतकार मनमोहन मिश्र जी के चर्चित गीत बा –

नाहीं अइल लउटि भवनवा, फगुनवा आइल बा दुअरे
सून बाटे मन क अंगनवा,फगुनवा आइल बा दुअरे
जब जब बहेले इ पछुआ बयरिया,
कंगना की जइसन बाजेले रहरिया,
वीनवा स झनकेला मनवा,फगुनवा आइल बा दुअरे

गोपालगंज के कवि संजय मिश्र संजय भी विरहिनी के उपटल दरदे के बखान करत बानी –

बरसे मदन रस खेत खरिहान में,
झूमेला गांव सजी होरी के तान में,
बूढ बरगदवो के मन बउराइल
घरे आजा सजना कि फागुन आइल

हिंदी–भोजपुरी के वरिष्ठ गीतकार प्राचार्य सुभाष चंद्र यादव जी होली में का आलम होला अपना गीत में बतावत बानी –

माने एकहू ना बतिया होली में रसिया
कहे दिनवे के रतिया होली में रसिया
कबो चान कहे हमके चकोरी कहेला,
कबो कहे दिलजानी कबो गोरी कहेला।
कहे पनवां के पतिया होली में रसिया।।
माने एकहू ना ...

युवा गजलकार मिथिलेश गहमरी के '' अजब भइया होली गजब भइया होली'' त साँचो अजबे–गजब बा. लोक मन के बात खोल के आ खुल के कहाइल बा. लेकिन आज के समाज के कड़वी सच्चाई त चंपारण के चर्चित कवि गुलरेज शहजाद जी कहत बानी अपना कविता '' घोघो रानी कतना पानी'' में –

आईं चलीं ढोल बजाईं /रास रचाईं
/नाचीं गाईं /बाकिर कइसे ...
मनवा में/ उदबेग मचल बा /चकराता बुद्धि कि कइसे / फगुआ कटी

राग–रंग के खेल हेराइल/ हो–हल्ला बा जात धरम के /सगरो लउके/
राजनीति के खेल तमासा / मन के बा उत्साह कि जइसे /फूटल होखे गोंट बतासा

भोजपुरी के पहिला प्रोफेसर डॉ. जयकांत सिंह 'जय' भी कुछ एही तरफ इशारा कर रहल बानी –

कइसे फाग गवाईं, बाजी ढ़ोल–मजीरा गाँव में
भाई भाई के दुश्मन हो गइल, अबकी एह चुनाव में

मेल–जोल के परब ह होली, भेद भुलावल जाला,
बाकिर अब एकरे माथे हर बैर सधावल जाला।
केहू पर बिस्वास न ठहरे, जिहीं–मरीं अलगाव में
कइसे फाग गवाईं, बाजी ढ़ोल–मजीरा गाँव में

पच्चीस साल पहिले हमहूँ एगो कविता लिखले रहनी जवन बाद में हमरा किताब चलनी में पानी में संकलित भइल–

रंगवा के एक दिन, खुनवा के सब दिन
होली होला चारदीवारी में
आ भाई के भाई भोंकेला खंजर
सोचीं ई कवना लाचारी में

त सवाल आ समस्या त बड़ले बा. अब जबाब भा समाधान केहू चाँद पर से आ के त दी ना. हम. निए के सब ठीक करे के बा. एह से हम इहे कहब कि होली होखे बाकिर खून के ना, रंग के. रूस आ यूक्रेन के बीच जवन खून के होली होता उ बंद होखे के चाहीं.

अहंकार, ऊंच–नीच, जाति–पात, बड़का–छोटका के देवाल ढाह के, सियासत के खोल से बहरी निकल के, झूठो के मर्यादा के बान्ह तूर के, मस्ती में डूब के, मुक्त कंठ से, दमदार स्वर में...आईं एक साथे गावल जाये – जोगीरा सारा रा रा रा रा रा. आईं होलिका जरावल जाय. ओह में गोंइठा, चइली, चिपरी, सिक्का, हरदी, नरियर, गुड़ डालीं भा मत डालीं, आपन नफरत, इरिखा, कलंक, डर, डाह, हम–हमिता जरूर डालीं. नफरत के होलिका दहन होखे तबे सच्चा होली मनी. अंत में अपना एगो दोहा से बात खतम करत बानी –

महुए पर उतरल सदा चाहे आदि या अंत
जिनिगी के बागान में उतरे कबो वसंत

❑❑

❍ **सिवान, बिहार**

बसंत आ रहल बा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

ढहत–ढिमिलात, कंहरत–कूंखत बसंत आ रहल बा, अइसन कतों–कतों सुनातों बा। सुनला पर नीमनों लागत बा आ मनो खुस होता। होरी क दिन नगिचा आ रहल बा, मने बसंत त आइये गइल होई। अब मानही के परी, जब कलेंडर के तारीखो बोल रहल बा, फेर न माने के सवाल कहवाँ से। दिल्ली से लेके एन सी आर तक हेर अइली, तबों मन लायक कुछ बात भेंटाइल नइखे।हो सकेला कि दिल्ली के चुनाव के जहर भरल बातिन से घवाहिल भइला के डरे एने आवे में डेरात होखे। राष्ट्रवाद आ संविधान के अझुराहट के सझुरावे में जब बड़–बड़ लोग के पसीना एड़ी से मुड़ी ले चढ़ रहल होखे,उहाँ बसंत के का मुराद?कुछ लोगन के बिरियानी आ कुछ लोगन खाति मरखनी बनि चुकल कई गो जगह अलगे बाति के प्रस्तुति दे रहल बा। अपने घरे में आवे–जाये खाति ढेर लोगन के तकलीफों बा। जहां झूठ–साँच के फरक करे में सारस के मत मरा गइल बा,उहाँ आम लोगन के कनफुजीआइल बड़ बात नइखे। गारी–गुन्नर के बाति छोड़ीं, जहवाँ प्रधानमंत्री आ गृहमंत्री के मारे के बाति नन्हका लइका–लइकी करत होखें, उहाँ बसंत के डेराए वाली बात माने जोग बा।

अचके खियाल आइल कि काहें न गावें चलल जाव, शहर में डरे बसंत नइखे आ पावत, गावें त जरूर आइल होई। अरे ई का, इहवों कुछ–कुछ उहें वाला हाल बुझाता। कुल्हि टोला –मोहल्ला धूमि अइनी,कतों बसंत के झाँको ना भेंटल। आम के पेंड़ में बउर त लउकत बा, मने ई त बसन्ते में होला। फेर बसंत मानल मजबूरी बा। अब जरी–मनी बुझाये लागल बा कि आजु के जमाना में कालीदास वाला बसंत न भेंटाई। कालीदास के जमाना कुछ आउर रहे, अब तलक त ऊ वाला बसंत बूढ़ा गइल होई, एह घरी ओहमें जवानी हेरल, बुरबकाहिये नु कहल जाई। अब बसन्ते के काहें दोष दीहल जाउ, जवानी के जोश त अब नवहा लोगन में कहाँ बाचल बा?कतों बाचलो बा त ऊ कुल्हि बाउर कामन में अझुराइल बा।

हवा–पानी आ जाड़ में कुछ बदलाव त देखात बा जरूर बाकि कुछ गड़बड़ बुझात बा। बयार त बदलल बा बाकि ओहमें सुगंध के बात कइल बेमानी बा। बसंत त हर बरिस अपना समय पर आवेला। असवों अइबे करी। मने बसंत बा बाकि ओहमें बसंत वाली बात नइखे। लागत बा कि बसंत के प्रान दुबरा गइल बा। टह–टह अँजोरिया के बात फागुन में भूलल–बिसरल बात लेखा हो गइल बा। कंक्रीट के जंगल में बाग–बगइचा,आम के मोजर में कोइली के कुंहुक, महुआ के कोंचिआइल,ढोलक के थाप आ अलाप सपना के सम्पत लेखा बुझा रहल बा। मने बसंत में जवानी आउर ओकरे रवानी के बात बेमानी हो चुकल बा।देख–सुन के मन में अचके ई बात समा गइल बा कि कहीं बसंत बेमार त नइखे नु भइल।

बसंत अपने आवे के सूचना बेगर विज्ञापन के कबों देत रहल होई, भा बे बोलवले आवतो होई। अब त लोग कह रहल बा कि बसंत अपना से ना आवेला, ओ. करा के बोलावे के परेला। सुनते मन अपने में अझुरा गइल कि के बसंत के बोलाई आउर कइसे बोलाई?अगर कुछ लोग के तइयार कइयो लीहल जाव तबो ऊ लोग काहें के बोलाई? मान लीं कि ऊ लोग बसंत के बोलाइयो देसु, त ओकर सोवागत के करी?जहाँ लोग अपना बूढ़ माई–बाप के घर से बहरिया देता,उहाँ त बोलावे के बात आ फेर सोबागत के बात?ई साँचो पत्थर पर दूब जमावे के बाति बुझाता।

बसंतोत्सव मनावे के रीत बा त मनावलो जाई। एह देश के मनई रीत आ परम्परा निभावते आ रहल बाड़ें बाकि अब के लोगन में पहिले वाली तासीर कहाँ बाचल बा?नवहा लोगन में होरी के हुलास मने अल्हड़ता आ चुहलबाजी कमें भेंटाला। जेतने बा ओतने में निभावे के बा। बसंत के अगवानी में सुरसती माई के अर्चना त करहीं के बा, त आईं अपनहीं एगो गीत से शुरू करल जाव–

सतली भगिया, जगवतु मोरी मइया हो
बीनवा क तार झनकवतु मोरी मइया हो ।
बिरथा जवानी गइल
रवानी भइल बिरथा
बुद्धि बिनु माई मोरी
कहानी भइल बिरथा
बुद्धिए क सोत बहववतु मोरी मइया हो ।
बीनवा क तार झनकवतु मोरी मइया हो ।

समाज जड़ हो रहल बा, ई बाति सभे मालूमों बा। बसंत जड़ता के बिरोधी ह,ढेर ना त थोर बहुत आपन असर देखावल सोभाव होला। बसंत का अंग–अंग में तरंग भरल, रोम–रोम हुलास भरल सोभाव ह। बसंत प्रेम पियार,मान–मनुहार के उत्सव भा मदनोत्सव भा बसंतोत्सव का रूप में बेसी जानल जाला। अब उत्सव बा त कुछ न कुछ असर होखबे करी। आम मोजरबे करी। अइसना में पगली कोइलियो गइबे करी–

पगली कोइलिया काढ़ि करेजा
पियउ के गोहरावेले।
छीजत राह निहारि कोइलिया
मिलन क आस जगावेले॥

कतने दिन में सुधिया आइल
अलम न भेंटल कोख झुराइल
कइसे मन बसंत अब गाई
भूललि राग सुनावेले॥ पगली कोइलिया––––

•• •• •• •• •• ••

बसंत में खिलल धूप , पियराइल खेत–बघार , खिलल– खिलल फूल भलही कम दे खात होखे, भलही बाग–बगइचा खेत–सिवान से निकर के बालकनी के गमला में सिमट गइल हो खे, बाकि बसंत का असर से उहो ना बच पावेला। चिरई–चुरमुन आजु सपना हो रहल बाड़ें मने संस्कृति के रूप बिला रहल बा। अइसना में एक बेर डॉ अशोक द्विवेदी के इयाद बरियारी से आइये जाला–

गलत कलेण्डर के तिथि लागे
जे देखे ,बउराइल भागे
कोइलरि गइल बिदेस भँवरवा
गड़ही – तीर मगन !!
कवन गीत हम गाईं बसन्ती
पियरी रँगे न मन !!

मन त अपनही में राजा होला, मोका पवते लइकाईं के दिन के ईयाद करल ना भुलाला। सरस्वती पूजा से जवन खुमार गंवही में चढ़ि जात रहे, ऊ एकसुरिए बुढ़वा मंगर ले बनल रहत रहे। रोज सांझी के कूल्हे मंदिरन पर रामायन गवाए लागे आ 5 दोहा पूरा होखते होरी के गवनई शुरू होखत रहे, खूब गवात रहे। ओह रंग में लइकन से लेके बुढ़वा तक ले बरोबर सराबोर होखत रहे। कहलो गइल बा–'फागुन में बाबा देवर लागे, फागुन में'। होरी के गवनई 'खेलें मसाने में होरी दिगंबर, खेलें मसाने में होरी।' से शुरू होके 'नकबेसर कागा ले भागा, मोर संइया अभागा ना जागा' आ 'होरी खेलें रघुबीरा अवध में, होरी खेलें रघ ुबीरा' से होत 'आज बिरिज में होरी है रे रसिया' जइसन गीतन से गाँव आ शहर दूनों गुलजार होत रहे। लोगन पर साँचो फगुनहट चढ़ि के बोलत रहे। भउजाइन से चिकारी देवरन के संगे भसुर लोग कबों–कबों कर लेत रहे आ केहु एकरा के बाउर ना मानत रहे। बाकि शहरन के छोड़ीं अब त गाँवन में रिस्तन के पहिलकी तासीर नइखे बाचल। अब जइसे–तइसे परंपरन के निबाहल जा रहल बा। त चलीं हमनियों के एगो गीत के संगे एह रीत के निबाहत बसंत के सोवागत क लीहल जाव काहें से कि बसंत आइये चुकल बा–

हमहूँ खेलब रंगवा से होरी पिया
हमहूँ खेलब रंगवा से होरी ॥

सासु से खेलब ननदियो से खेलब
अरे देवरा से खेलब बरिजोरी पिया ॥
हमहूँ खेलब रंगवा से होरी ॥

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

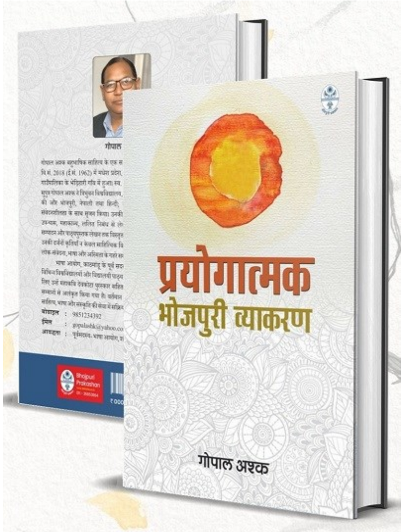

फगुआ के लोक–दर्शन : राग से विराग तक

शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

फगुआ के आगमन होतहीं प्रकृति आ मनुष्य दुनो एक साथ बउरा उठेले। खेत में पीयर सरसों के मुसकान, आम के मंजर, हवा में घुलल सुगंध, चिरई के चहचह –ई सभ जीवन के भीतर छुपल ऊर्जा के नया रूप में जगा देला।

मैथिली के महाकवि विद्यापति लिखलेन– "आइल ऋतुपति राज वसंत, धावल अलि कुल माधवी पंत।"

बसंत के राजसी छटा खाली मौसम के बदलाव ना, बलुक विज्ञान से लेके मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र आ आध्यात्मिकता तक के गहिर ताना–बाना में गूँथल बा। फगुआ–होली भारत के समेकित जीवन–अनुभव के रंग–बिरंग उत्सव ह, जेकरा में परंपरा, आनंद आ अपनापन गूँथल बा। खेत में पीयर सरसों फूले लागेला, आ मन में अइसन उमंग उठेला जइसे बरिसन बाद खुशी मिलल होखे।

आनंद आ उमंग के एह परब के पाछे ढेर कथा कहानी बा, आ हर कथा के पाछे कवनो न कवनो वैज्ञानिक सोच छुपल बा। बसंतोत्सव, होली, फगुआ भा मदनोत्सव–एह सभ के जड़ में पुरुखन के गहन अनुभव आ जीवन–दृष्टि रहल बा।

फगुआ खाली रंग–अबीर के खेल नइखेय ई देह, मन आ आत्मा तक असर करे वाला सामूहिक अनुभव ह। फागुन के आवते प्रकृति में जवन बदलाव आवेला, ओइसहीं मनुष्य के भीतर नया ऊर्जा के संचार होखे लागेला। सूखल डाल पर नया पात फूटेला, खेत में हरियाली लहराला, समाज में उमंग के स्वर गूँजे लागेला। ई उमंग धरती के माटी से लेके जिया–जंतु आ लता–बिरवाई तक सभ में पसरल रहेला।

बाकि ऊर्जा कइसनो होखे, ओकर प्रवाह नियंत्रित होखल जरूरी बा। बेलगाम ऊर्जा शारीरिक, व्यवहारिक आ सामाजिक नुकसान कर सकेला। एही से पुरखा लोग ब्रह्मचर्य जइसन अनुशासन के माध्यम से काम–ऊर्जा के संतुलित रखे के बात कहत रहे। जाड़ा में गरमी आ बल बनवले रखे खातिर विशेष खान–पान आ औषधि के प्रचलन रहल। शरीर में ऊर्जा एकट्ठा होत रहल। बाकिर इहो साँच बा कि ऊर्जा के बाँधल ना जा सक–विज्ञान कहेला कि ऊ रूप बदलत रहेला। नदी पर बाँध लगावल जाय आ ओकर प्रवाह के साधल जाव त ओहसे बिजली बनेलाय आ बाँध टूटे त विनाश तक हो जाला। एही से शरीर के ऊर्जा के साध के संगोरे के साथे साथ रेचनो (निकास) जरूरी बा।

ऋतु–परिवर्तन के दृष्टि से बसंत में कफ–दोष बढ़ेला। सक्रियता, नृत्य, धूप आ रंग–खेल शरीर के स्फूर्ति देला। चरक संहिता में वर्णित ऋतुचर्या अनुसार मौसम बदले पर शोधन जरूरी बा–

"तस्माद्वसन्ते कर्माणि वमनादीनि कारयेत।
गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत॥२३॥"1

(वसंत ऋतु में वमन (उल्टी) आ अउरी शुद्धिकरण प्रक्रिया करे के चाहीं। भारी, खट्टा, तेल वाला आ मीठ आहार से परहेज करे के चाहीं आ दिन में ना सुते के चाहीं।)

हमनी के पुरनिया लोग बड़ा चालाक रहले। स्वास्थ्य आ शरीर सबसे बड़का धन ह एह महातम के बुझते–समझते समाज के हरेक व्यवहार में धरम–करम घुसा के समाज के एह तरहा बाँध देले कि जाने–अनजाने में लोगन के स्वास्थ्य के रक्षा होत रहल। काम–ऊर्जा के परवाह जब रुकी त कहीं ना कहीं घात करबे करी–मन में विकार लायी, शरीर दूषित करी आ फेर समाज के। मन के विकार दूर करे खातिर समाज में तरह–तरह के बरत, त्यौहार आ उत्सव बनावल गइल। बाल्मीकि रामायण में बसंतोत्सव के चर्चा मिलेला। भविष्य पुराण में कामदेव आ रति के पूजा के उल्लेख बा। संस्कृत साहित्य में एह उत्सव के बारे में खूब लिखल गइल बा। संस्कृत नाटक 'चारुदत्त' आ 'मृच्छकटिकम्' में कामदेव के जुलूस निकाले के चर्चा बा। 'वर्ष–क्रिया कौमुदी' में ढोल–नगाड़ा, गाना–बजाना, कीचड़ फेंकला आ हासो–परिहास के वर्णन बा। कालिदास के 'ऋतुसंहार' में बसंत के वर्णन अइसन बा कि आज के समय में उ वर्णन संभवतः विवाद का विषय बन सकेला। हर्षचरित, दशकुमार चरित्र आ कुट्टनीमतम् सभ में मदनोत्सव के चर्चा बा।

अब सोचल जाय त समाज के एह तरह के उत्सव आ आयोजन के जरुरत काहे पड़ल? कारण साफ बा–काम–ऊर्जा के मनोविकार आ मनोरोगी होखे से बचावे खातिर। समाज एह उत्सव आ आयोजन के माध्यम से काम–ऊर्जा के मनोविकार आ मनोरोगी होखे से बचावे के उपाय खोजल। अश्लील हास –

परिहास के छूट देके मन के विकार बाहर निकाले के उपाय कइलस। देखल जाय त पुरखा लोग एह तरह के आयोजन में अइसन–ढेर चीज समाहित कइले रहे जेकरा के साधारण लोग के समझ से बाहर रहे। आ एह तरिका के कईगो पश्चिमी वैज्ञानिक लोग पुष्टि कइले बा। उन्नीसवींदृबीसवीं शताब्दी के बीच आस्ट्रिया में सिगमंड फ्रायड2 नाम के एगो स्नायु आ मनोविज्ञान विशेषज्ञ भइलन। उनकर शोध 'कैथार्सिस सिद्धांत' में मन के भाव दबवला से मानसिक असंतुलन के चर्चा मिलेला। होली में हास्य, व्यंग्य, श्रृंगार, खुलापनकृई सभ मनोवैज्ञानिक रेचन के लोक–प्रक्रिया ह। जे बात सामान्य दिन में कहना मुश्किल होखे, ऊ होली में गीत बन के सहज निकलेला।

होली के समय समाज अस्थायी रूप से उन्मुक्ति के अनुमति देला, बाकिर समय–सीमा के भीतर। ई अनुशासित अल्हड़पन आ नंगई भारतीय संस्कृति के सूक्ष्म संतुलन के उदाहरण ह।

वाराणसी में होली पर खास किसिम के कवि सम्मेलन आ फाग–गायन होला। कवी लोग अंग प्रत्यंग के बखान वाला अइसन कविताई करेला कि कान में सीसा पिघल जायकृबाकिर समाज ओहिजा हुजूम लगा एह कार्यक्रम के सुनेला आ बुरा ना मानें। ओइसहीं बरसाना के लट्ठमार होली में हुरियारा (ब्रज के ग्वाल–बाल जे होली खेले निकलेला) लोग ब्रज के मेहरारू लोग के सोझे अश्लील चौपाई आ छंद पढ़ेला, चुटकी लेला आ प्रेम से लट्ठ खा ले ला लोग। ई नजारा बाहरी दुनिया के बुरा लाग सकेला बाकिर लोकमानस में ई प्रेम–लीला के प्रतीक ह।

मदनोत्सव बीत जाए के बाद ई आचरण केहू ना स्वीकारे। एहि से पता चलेला कि समाज उन्मुक्ति के "काल–सीमा" तय कइले बा। ई स्वीकृति काहे? काहे कि ई काल–विशेष के छूट ह। होली के बाद ओही व्यवहार अगर दोहरावल जाव त उ सामाजिक आ कानूनी अपराध बन जाई। एहि से स्पष्ट बा कि लोकसंस्कृति में उन्मुक्तता के आजादी त दियाइल बाकि मर्यादा के चौखटो बनावल गइल बा।

होली में खाली अश्लील हास–परिहास ना, राग आ रंगो के बड़का महातम बा। आ ई खेल अबीर–गुलाल तक सीमित नइखे। ई रंग भारतीय लोकजीवन में भाव, ऊर्जा, शुद्धि आ समरसता के प्रतीक ह। जब देह पर रंग पड़ेला, त ओही घड़ी सामाजिक भेद–जाति, वर्ग, आयु–सब कुछ क्षण भर खातिर मिट जाला। रंग समानता के माध्यम बन जाला।

आयुर्वेद अनुसार वसंत ऋतु में कफ पिघले लागेला। चरक संहिता के ऋतुचर्या सिद्धांत बतावेला कि एह समय हल्का, कड़ुआदृतीख आ कसैला आहार उपयोगी होला–

"गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत॥२३॥"

पुरान समय में होली के रंग प्राकृतिक फूल–पात से बनावल जाला–जइसे टेसू (पलाश), हल्दी, गुलाब। ई रंग त्वचा खातिर हितकारी आ वातावरण के अनुकूल रहत रहे। एह दृष्टि से रंग केवल खेल ना, बलुक ऋतु–परिवर्तन में शरीर के संतुलन के सांकेतिक अनुष्ठान रहे।

आध्यात्मिक अर्थ में हरेक रंग के अलग माने बा। ब्रज परंपरा में होली राधा–कृष्ण के प्रेम–लीला से जुड़ल बा। कृष्ण के नीला रंग अनंत आ गहराई के प्रतीक ह, जबकि राधा के लालिमा प्रेम आ समर्पण के। पीयर रंग ज्ञान आ बसंत के प्रतीक ह, आ हरियर नया जीवन के। जब लोग एक–दूसरा पर रंग डालेला, त उ एगो आध्यात्मिक समरसता के अनुभव होला–"अपने ही रंग में रंग ले कान्हा।"

होली में रंग लगावत समय हँसी, शोरगुल, गीत, नाच–ई सब मिलके मानसिक रेचन (Catharsis पैदा करेला। रंग के छुअन से देह में स्पर्श–संवेदना जागेला। तेज रंग आँख के उत्तेजित करेला। सामूहिक हँसी तनाव घटावेला, आ एह तरह होली सामाजिक मनोचिकित्सा जइसन काम करेला। एह दिन "बुरा न मानो होली है" केवल कहावत ना, बलुक सामाजिक अनुबंध ह–कि आज के दिन मन के मैल धो डालीं।

रंग के छींटा एक तरह से देखल जाव त माफी आ छमा के परतोख ह–पुरान मनमेटाव आ रंजिश के धो देवे के संकेत। होली के रंग देह पर चढ़ेला, फेर मन में उतर जाला। रंग से राग पैदा होला, राग से उमंग, उमंग से थकान, आ अंत में शांति होला। होली के रंग जीवन के ओह रूप के उजागर करेला कि एहिजा सब कुछ छणिक बा–आज रंग बा, काल धोआ जाईय बाकिर अनुभव के छाप भीतर रह जाई।

अब जब रंग के उमंग भइल त होली में चंग, मृदंग आ ढोलक के थाप उठबे करी। फाग के राग में घुल के लोग विराग तक पहुँच जाला। फाग के बाद चइत के तान में विराग से विरह तक डूब जाला। कहल जाला–फाल्गुन बसंत के लड़कपन ह, त चईत ओकर बुढ़ारी। दीपचंदी आ कहरवा के मेल प दोगुन–चौगुन राग के फेंटत जब झाल, ढोलक,

ताली आ सब कंठ एक हो जाय त शरीर के रोआं–रोआं नाच उठेला। ई स्वर–लय ध्यान के रूप ले लेला।

"बँगला में उडेला अबीर...

आहो लाल बँगला में उडेला अबीर..."

एह गीतन में "लाल", "हा", "हू" जइसन ध्वनि खूब प्रयोग होला। "हा" आ "हू" नाभि–केन्द्र (मणिपुर चक्र) के आंदोलित करेले। मंडली में ढोलकिया ध्यान के केंद्र बन जाला, आ भीतर के वासना, क्रोध, आक्रोश लय–ताल में ढल के संगीत बन जाला।3 भारतीय पुराण4 परंपरा में 'हाहा' आ 'हूहू' दुगो यक्ष के उल्लेख मिलेला, जे गीत–संगीत में निपुण रहलें। लोकविश्वास बा कि फगुआ आ चौता के गायन में जब गवैया "हा..." आ "हू..." के लंबा आलाप लेला, त उ ओही यक्ष परंपरा के ध्वनि के गूँज होला। "हा" के विस्तार छाती से निकलेला, "हू" के कंपन नाभि आ कंठ में गूँजे ला। ई ध्वनि वातावरण के झंकृत कर देला। एह नाद में देह के ऊर्जा जागेला, मन के आवेग बह जाला, आ चेतना ऊपर उठे लागेला। ढोलक के थाप, झांझ के टंकार, "हा–हू" के आलाप–ई सब मिलके सामूहिक ऊर्जा के विस्फोट पैदा करेला। ई विस्फोट विध्वंस ना, बलुक शोधन ह।

ओशो के नाद–दर्शन5 में कहल गइल बा कि अनहद नाद (मन के अन्दर के आवाज) सुने से पहिले बाहरी शोर के खतम (विसर्जन) जरूरी बा। उनकर ध्यान–पद्धति में तेज संगीत, उन्मुक्त नृत्य, जोरदार श्वास–प्रश्वास आ फेर अचानक मौन–ई क्रम कई बेर दोहरावल जाला। ई मानसिक "रेचन" (Catharsi) के प्रक्रिया ह, जेकरा के ओशो ध्यान के जरुरी अंग बनवले।

पूर्वांचल के धमाल आ फगुओ अइसने सामू. हिक साधना ह–पहिले शोर, फेर थकान, फेर मौन। फाग के राग दोगुन चौगुन होते उन्हे पर पहुंचेला आ एके बार 'हाँ' के आवाज के साथ ले तुड़ दियाला। क्रम चालत रहेला आ इहे यात्रा शोर से नाद तक, देह से देवत्व तक के ह।

होली अस्थायी समानता के परब ह। जाति, वर्ग, पद के भेद कुछ समय खातिर धुँधला पड़ जाला। "सब रंग में एक" के भाव सामाजिक तनाव घटावेला। अइसन उत्सव समाज खातिर सुर क्षा–भाल्भ (मिजल अंसअम) जइसन काम करेले–दबाव बाहर निकलेला, संरचना सुरक्षित रहेला।

फगुआ के अश्लील कह के नकारल उचित ना होई। लोक–संस्कृति के खुलापन विकृति ना, प्रकृति के सहज विस्तार ह। जब ऊर्जा मर्यादा में अभिव्यक्त हो जाला, त समाज स्वस्थ रहेला। एह तरह फगुआदृ होली शारीरिक सक्रियता, मानसिक रेचन, सामाजिक समरसता आ आध्यात्मिक नवजीवन के समन्वित उत्सव ह। ई हमनी के सिखावेला कि शुद्धि खाली नियम से ना, बलुक हँसी–खुशी, अल्हड़पन, राग–रंग आ उमंग के प्रवाहो से हो सकेला। फगुआ सिखावेला कि दमन से ना बलुक संतुलित अभिव्यक्ति से समाज स्वस्थ रहेला।

अंत में अतने कहे के बा कि होली मन के भीतर के मलिनता जला के चेतना के उजास देवे वाला परब हकृजहाँ हर साल आदमी अपने के अपने से भेंट करावेला, राग–रंग में भींजेला आ फेर साल भर खातिर नया हो जाला।

सन्दर्भ :

1 चरक संहिता, सूत्रस्थान, तस्यशितीय अध्याय, श्लोक 23 – "तस्माद्वसन्ते कर्माणि वमनादीनि कारयेत्..."

2 Sigmund Freud Studies on Hysteria (1895), कैथार्सिस सिद्धांत।

ङ मगध कि रहस्यावृति साधनाएं – डॉ रवीन्द्र कुमार पाठक

4 हाहा–हूहू यक्ष उल्लेख – महाभारत एवं पुराण परंपरा (गंधर्वध्यक्ष संदर्भ)।

5 Osho Dynamic Meditation Discourses, नाद व कैथार्सिस चरण।

❑❑

❍ द्वारका , नई दिल्ली

गाथा में गूँथल होरी के चित्र

दिनेश पाण्डेय

ऋतु (ऋृतु, कित्) के √ऋ गमन (गतौ), गतिशीलता, आगे बढ़े, गति पावे (गति प्रापणयोः) के अर्थबोधक ह। वैदिक चिंतन–धारा में रितु–बदलाव के पीछे 'अग्नितत्त्व के भूमिका मानल गइल बा। 'अग्नि' के एक विशेषण 'ऋत्विज' ह जेकरा में 'ऋतुभिर्यजति' –रितु के प्रसारक के गुन मुख्य बा। 'अग्नि' सृष्टि के प्राण–तत्त्व ह। सौरमंडल आ पृथ्वी के बीच के संबंध 'सम्वत्सराग्नि' के आसरे ह। रितुअन में बदल. ाव एकरे उन्नति भा छय का ओजह से संभव होला। वैदिक चिंतन में याज्ञिक बिधान के जरिए प्रकृति के प्राण–पोषण के नजरिया रहे। एहि सोच से बसंत आदि रितु में अग्न्याधान के बिधान कइल जात रहे। बसंत के आगमन के संगे नया सम्वत्सर शुरू हो जाला रहे, ए से एहि रितु के बहुत महत्व दिहल गइल। शतपथ (11-5-3-8) के अनुसार– "स वसंतसनिडोऽन्यानृतुन्समिन्ह्व" याने प्रज्ज्वलित भइल बसंत आन रितुअन के पोढ़ावेला।

होली के संबंध एह प्राचीन यज्ञ–विधान के अलावे 'नवानेष्टि' से ह। 'होला' अधपक अन्न के संज्ञा ह। नया फसिल आवे के हेह मौसम में समिधा के रूप में अग्नि के समर्पित गहूँ–जव के ऊमी के प्रसाद के आस्वादन–वितरण लोक–तिरपिति के बात रहे। एही संबंध से 'होलाका' (हुविच्, तं लाति –लाक्कन्टाप्) बसंतागम प मनावल जाएवाला उत्सव आ फगुनी पुनवाँसी के वाचक भ गइल। 'होलिका', 'होली' भा तद्भव 'होरी' शब्दन के बिकास एही 'होला' से ह जवन एह खास परब, अगिजा, रंग–क्रीड़ा, एह औसर प गावल जाएवाला गीतन के आदि के बोधक हवें। 'काठक–संहिता' में 'होला' के एक करम–बिसेखी के रूप में देखल गइल बा जवन मेहरारुन के सोहाग बदे कइल जात रहे, पुनवाँसी के चनरमा एकर देवता हवन– "होला कर्मविशेषः सौभाग्याय प्रातरनुष्ठीयते, तत्र होलाके राका देवता।"

होली के मौजूदगी के इन्ह पुरातन संकेतन्ह से अलगे पुराण भा आन संस्कृत साहित्यो में होली के जिकिर बा जेकरा में जुग के अनुरूप कुछ–कुछ अलगाव नजर पड़ेला। शिव द्वारा मदनदहन के कथा, प्रह्लाद–होलिका आख्यान, शिव के बरदान पा के उन्मत आ हिंसक ढुंढिका के बेअसर करे बदे कादो–कींच, हल्ला–गुदाल, गरी – गलौज के लोकाभिचार जइसन सामग्रियन के संबंध होली से जोड़ल गइल बा। 'पूर्वमिमांसा', 'कथागृह्यसूत्र', 'नारदपुराण', 'भविष्यपुराण', हर्ष के 'प्रियदर्शिका' आ 'रत्नावली', कलिदास के 'कुमारसम्भवम्' आ 'मालविकाग्निमित्र' आदि में होली के बहुतायत उल्लेख भइल बा। संस्कृत साहित्य में बसंत रितु से जुड़ल एह उत्सव के चित्रण अधिकतर प्रकृति के सरूपगत बदलाव के अंकन में मुखर बा। ई बदलाव भौतिक आ मानसिक दूनों तरे के बा। होली के प्राचीन सरूप मदनोत्सव याकि वसन्तोत्सव के रसगर आ मनोहारी रूप के उकेरन एह सामग्रियन में मौजूद बा। बसंत के मादक असर से नर–नारी के मन में उपजल उद्दाम लालसा, सिंगार–पसंदगी, सिंगार–चेष्टा, स्त्रियन के हाव–भाव आदि के भरमार बा। बसंत में मदमत्त अपरूप कामिनी के लतमारी से अशोक के खिले भा मुखमदिरा के सेचन से मौलसिरी के फूल से लदर जाए के अचरज भरल 'वृक्षदोहद' के कविप्रसिद्धि संस्कृत साहित्य के आपन खासियत ह। होली में प्रकृति में मौजूद रंगन का ओरि खिंचाव, उत्सव में तेकर इस्तेमाल आदि के साफ संकेत बाड़न। 'ऋतुसंहार' (कालिदास) से लिहल एकाध परतुक देखल जाव–

"कुसुम्भरागारुणित दुकूल नितम्बबिम्बानि विलासिनीनाम्।
रक्तांशुकै कुंकुमराग गौरलकियते स्तनमण्डलानि।।"

[बिलासिनी सबके पिछाड़ प मेंहीं कुसुमी रेशमी वस्त्र आ कुंकुम में चहबोरल लाल टेस दुपट्टा में ढकल रुचिर छाती बा।,

"आलिप्यत चंदनमंगनाभिमदालसाभिमृगनाभियुक्तः"

[स्त्रियन के अंग चंदन चुपड़ल आ कस्तुरी से बासित बा।,

इन्ह टूक–टूक तस्वीरन के का बात? हिंहा त सगरी धरती लोहित 'अंशुक' पेन्हले बहुरिया बनल बाड़ी– "रक्तांशुका नववधुरिव भाति भूमि।" बाकी एक बात ध्यान देवे जोग बा कि इन्ह सामग्रियन में होली

के उल्लेख याज्ञिक अनुष्ठान, कवनो पूजा–परब बिधान के प्रसंग में बा या त प्रकृति के सुंदरता भा स्त्री के मादक श्रृंगारिक चेष्टा के संदर्भ में। ए में आभिजात्य प्रभाव अधिका बाड़न। होली के लेके तत्कालीन लोक–काज–बेवहार भा आमजन के गतिबिधि के व्यापक संकेत 'गाहासतसई' में उभरल बा। हिंहाँ ना प्रकृति के भव्य आ कल्पना के पराकाष्ठा तक लुनाई के बखान बा ना आभिजात्य–वर्ग के आडंबर आ बिलासिता से भरल जिनिगी के मांसल बरनन। जवन बा तवन जथारथ बा, सहज बा, नीमन बा तवनों, जबून बा तवनों, रूप बा ऊहो, बदरूप बा ऊहो। एकरा के बास्तविकता से अलगा कवनों ओढ़ल नैतिकता के टकौरी प ना तउलल जा सके। फागुन आ गइल, अइबे करी, आखिर 'ऋतु–चक्र' से जुरल चीज ठहरल, अंगुरी धरा के केहू लिवा लावे अइसन बात थोरे होला? आ आइए गइल त ई कहल कि आ गइल त हमरा का काम? एह हठधर्मिता ते काम ना चली। 'मन में भावे मूँड़ी हिलावे' वाली निरपेक्षता से सभे वाकिफ बा। हँ, छाती ठोक के जवन गिला–मलाला बा ओ. करा के सोझे धर देवे में का दोख–

"टिट्ठा चूआ, अग्घाइआ सुरा, दक्खिणाणिलो सहिओ।
कज्जाइं व्विअ गरुआइँ, मामि! को वल्लहो कस्स?"
(गाहा सतसइ 1-97)

[मामी, बसंत में आम के पल्लो देखलीं, सुरागंध लिहलीं, दखिनहिया के सहलीं, ईहे सब काज हमरी जिनिगी में प्रमुख भ गइले। हे हंत, एह दुनिया में के केकर बालम?]

अब मामी माथ हगुआवल चाहस त उनुकर मरजी। फागुन आ गइल, आ तबो बालम ससुरू घर छोड़ि द ुरबिनिया में अझुराइल बाड़े त ऊ बूझस–

"पउरजुवानो गामो महुमासो जोवणं पई ठेरो।
जुण्णसुरा साहीणा असई या होउ किं मरउ।"
(गाहासतसइ 2-97)

[गाँव में ढेर जुवान हवें, मधुमासो आ गइल, जवानी ह, पति बूढ़। भीरी पुरान मद्य बा, कुचाली ना होखीं त का मू जाईं?]

बाप–रे–बाप! हतिना प त नैतिकतावादी लोग दु–दु बाँस ऊँचा छरपे लगिहें। ई लोकसमाज ह, मन के भाव गोपन रख के तरे–तरे गुल खिलावे के अपराध बोध के ढोवे? जवन बा तवना में एक खुलापन बा। समय मोका देले बा त तेकर भरपूर मजा काहे ना लेल जाव? बाकी सम्हर के, सोच–विचार के–

"चिंतेसि थनहराआसिअस्स मज्झस्स वि ण भ³गम।"
(गाहासतसइ 2-60)

[सोचऽ, सुदीर्घ स्तनभार से कहीं कमर में लोच ना हो जाय।,

अइसन नइखे कि लोकजीवन में मरजाद, संयम, लाज आदि बेमानी बाड़े। बिपरीत हालातो में आदर्श के पालन कवनो समाज खातिर बेहतर स्थिति के सूचक ह। पतन में देर ना लागे, बिछिले के जमीन कम नइखन बाकी सधल पाँव के गति कबो सुख का ओरि अवसि के ले जाई ई संभावना प्रबल बा। बसंत बा त बा, तेकर लुनाई आ मादकता जीउ प हावी होत बा त होखे, एह सब असर से बिलकुल बाँचल केहू कइसे रह सकत बा? गंध पसरी, तेकर तसीर घ्राण से लेके प्राण तक उथल–पुथल मचाई बाकी अइसन नइखे जे सबकुछ नियंत्रण से बाहर बा–

"सच्चं भणामि बालअ णत्थि असक्कं वसंत मासस्स।
गंधेन कुरवआणं मणं पि असइत्तणं न गआ।"
(गाहासतसइ 3-19)

[निपट अबोध! साँच कहीं, बसंत में कुछो अशक्य नइखे। कटसरैया के गंध के बावजूद अबहीं तक ऊ सतीत्व से इचिको डिगलि ना।,

ई त भइल ओह हालात के बात जवना में सबकुछ मुआफिक नइखे। जिनिगी में सुख–दुख, अनुकूलता–प्रतिकूलता के स्थिति हरदम एकरूप ना रहे। सब ठीक–ठाक बा तबो मन के ऊहापोह के का? का करीं, का ना एही दोपापाही में सोचलका कहईं पीछे छूट जाला आ जवन होला ऊ अगते के सोच से एकदमे बेफाँट के चीज होला–

"धेत्तूण चुण्णमुट्ठिं हरिसूससिआए वेपमाणाए
भिसिणेमित्ति पिअअमं हत्थे गंधोदअं जाअं।"
(गाहासतसइ)

[प्रीतम प फेंकीं, ना फेंकीं? हरख–उत्सुकता से भरल एही दोपापाही में मुट्ठी में लेल गुलाल गंधोदक भ गइल।,

होरी में कींच–कादो में चहबोरे के पुरान रीत ह। हँ, एह बात के चेत रहे कि कींचड़ डाले के बजाय उछारे वाली बात ना होखे। परावे से बरावे के बात नइखे बाकी मोरी–पनरोह के गंधात गू–मूत में लभेराइल केकरा नीक लागी?

पाँकी–पाँकी में फरक ह। मधु के दलदल में धँस के जानो गइल मँहग ना ह। कींचड़ हरमेसे बिरूपता ना पैदा करे। कइयक परिस्थिति में त ई खूबसुरती के साधन हो जाला। निर्दोष कींचड़ में लपेटाइल जनी के छब देखि के सखी के कहनाम कि–

"फग्गुच्छणणिद्दोसं केण वि कद्दमपसाहणं दिण्णं।
थणअलसमूहपलोट्टंतसेअधोअं किणो धुअसि।।"
(गाहासतसइ 4-69)

[फागुन के उत्सव में निर्दोष कींच से केहू द्वारा सिंगारित स्तन–कलश पसीना से अपने धोआइल बा, त फेरु काहे धोअत बाड़ू?]

चलीं उत्सव बा त तनी दहिने–बावें के बात के केहू तरजीह ना देवे। मन बहके त बहक जाए दीं, काल्हु से त फिर उहे मुखौटा पेन्हहीं के बा। आज भाव–बिरेचन के उत्सो ह, मन कस ना मानी। केहू टोके–रोके मत–

"दइअकरग्गहलुलिओ धम्मिल्लो सीहुगंधिअं बअनं।
मअणम्मि एत्तिअं चिअ पसाहणं हरइ तरुणिम्।।"
(गाहासतसइ 6-44)

[पिय के हाथ गहाए से जूड़ा आ मदिरागंध से भरल मुँह, मदनोत्सव में जवनकिन के ई साज–सज्जा मन के मोह लेला।,

"गामतरुणीओं हिअअं हरन्ति छेआणं हरिल्लीओ।
मअणे कुसुम्भरञ्जिअकञ्चुआहरणमेत्ताओ।।"
(गाहासतसइ 6-45)

[मदनोत्सव में महज कुसुमी रंजित 'कञ्चुक' (चोली) के आभरण में भारी स्तनवाली गाँव जुवति छैलन के मन हर लेली।,

मन में उमंग कम नइखे, सारा माहौल तेही लाएक बा, लोग–बाग, प्रकृति, जड़–चेतन सब डूबल। भितरे–बहरी के रंग में बोथा बाकी कुछ कचोटत बा। का कहल जाव, कइसे कहल जाव?

"उप्पहपहाविहजनो पविजिम्हिअकलअलो पहअतूरो।
अव्वो सो च्चेअ छणो तेण विणा गामडाहो व्व।।"
(गाहासतसइ 6-35)

[लोग कुरहते दउर जालें, हो–हल्ला मच जाला, नगाड़ा बाजे लागेला। हाय, उनुका बिना ई सब गाँव–डाह अइसन लागत बा।,

❑❑

जब से बहल बयारि फगुन के

दिनेश पाण्डेय

अमराई में कहईं कोइलि
बोल गइल ह।
मोजर गंध हिया के बान्हन
खोल गइल ह।
उसठा होंठ कसाँइन लागे
आँखिन चढ़ल खुमार सगुन के।

कवन निगोरा टेसू बन में
आग लगावल?
कोना आँतर में मुरझाइल
राग जगावल।
पनख रहल मनगुपुते डारी
अँखुवन से गँउजार तरुन के।

कुइँ दल खिलल भँवर मदमातल,
घूप थिराइल।
तलई के पानी में केकर
रूप हिराइल?
बउराहिन जलमछरी जोहे
पता न कउँची खाक–बिहुन के।

रतियो कुछ गईंआइल जइसन,
चैन उपाटल।
ना सुख सपन सिराइल तबले,
नीन उचाटल।
बन पाँखी के तान तान से,
बेध रहल ह सभ सुनगुन के।

❑❑

❍ संचार नगर, खगौल, पटना

फगुन राग

डॉ. सतीश कुमार श्रीवास्तव 'नैतिक'

हऽ फागुन

पतझड़ में सावन कऽ आहट, हऽ फागुन
कुदरत कऽ अनमोल सजावट, हऽ फागुन

बदरी की घूँघट से झाँकत बा सूरज
जाड़ा में तनिका गरमाहट, हऽ फागुन

फूल–कली,तितली–भँवरा, मोजर–कोंपल
रंगन कऽ बेजोड़ मिलावट, हऽ फागुन

सरसों पर चढिके केराय, बोलत बाटे
दुनिया से कइसन घबराहट, हऽ फागुन

मौसम घोल रहा बा मधु– मिसरी 'नैतिक'
दूर करऽ मन के कड़वाहट, हऽ फागुन

❑❑

फाग लगावत आग

साजन काहें न अइले
मन भावे रंग न राग
पिया मोर कहँवा हेरइले

धानी धरतिया पहिन इतराए
बाग में फूल हँसे–मुस्काए

लूटत भँवरा पराग
देखि ा जिया जरि गइले.........

चढ़त फगुनवा देवर घर आए
कूके कोयलिया पलास फुलाए

मोरा छत बोले न काग
बलम कहवाँ अझुरइले.....

फगुवा में घर–घर फाग गवाता
मनवा के हमरो न तनिको सुहाता

सेजिय डसे अस नाग
पिया परदेशी भइले.........

❑❑

आ गइल फागुन हो

गोहूँ गदराए लागल/सरसो फुलाए लागल
बहल बसंती बयार
आ गइल फागुन हो
आ गइल फागुन हो

आम मउराए लागल/भँवरा गुनगुनाए लागल
धरती कऽ भइल सिंगार
आ गइल फागुन हो
आ गइल फागुन हो

जाता जहाँ ले, इ चंचल नजरिया
धरती के चूमत बाटे बदरिया
बेधेला अइसे, बसंती बयरिया
काबू में नइखे बाली उमिरिया

मन अझुराए लागल/सपना सजाए लागल
जियल भइल दुसवार
आ गइल फागुन हो
आ गइल फागुन हो

बाग–बगइचा सगरो फुलाता
सरसो पऽ चढि के, मटर मुस्कुराता
तीर मदन के लागल बा अइसन
अक्सर ओढ़निया, गिर–गिर जा ता

केहू मन भाए लागल /सपना में आए लागल
घोड़िया पऽ हो के सवार/आ गइल फागुन हो

मारे ले भौजी, दिन–रात ताना
छेड़े सहेलिया, गा गा के गाना
जेतने संभारीं बहके ला ओतने
काँच उमिरिया में दिलवा दिवाना

नसा नियर छाए लागल/देंह अलसाए लागल
अंग–अंग टूटे हमार/आ गइल फागुन हो

❑❑

❍ सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस
कोयंबत्तूर, तमिलनाडु–641014

फाग राग

कनक किशोर

अंगे – अंगे रिसेला बदनिया,
कइसन बसंती बयार
नीक नाही लागे भवन हो।

नाही नीक लागेला ननदी के बोलिया
देवरा अबाटी खींचे छत पर कगरिया
कतनो संभाली नाही संभले ला साड़ी
पुरवा उत्पाती उड़ा ले जाला अँचरिया।

पोर – पोर टभेकेला बदनिया,
बहे पुरवइया बयार
कंत हमार परदेश हो।

मदवा के मातल मोर नयन सखी
एने ओने तिकवत मनवा अधीर सखी
कवना सवतिया के नेह में भूला गइले
कंत परदेशिया ना भेजले सनेस सखी।

रसे – रसे बथेला बदनिया,
देहिया भइल अब भार
रंग से रंगाईल अंग हो।

कइलऽ करार सईयां फगुआ में आइब
जयपुर के चूनरी साथ में ले आइब
सोना के नथुनिया के आस देके गइलऽ
ना पूरी असरा त हमहूं ठेंगा देखाइब।

मस – मस मसकेला अँगिया,
बहे फगुनहटा बयार
भंग में सनाइल फाग हो।

❑❑

लाल गाल पे गुलाल,
लाल गाल पे गुलाल
अँगना में डोलेली गुजरिया।

नाही गोरी पियले शिवजी के बुटिया
नाही कवनो नशा के निशान
रहि रहि तिकवली बलम के ओरिया
बलम बाड़े अबहूं नादान
लाल गाल....... गुजरिया।

बलमा अनाड़ी कुछुवो ना बुझेला
नाही बूझे फगुआ के रार
बहे फगुनहटा पोर – पोर जरावेला
संभले ना अँगिया से भार
लाल गाल.......... गुजरिया।

फुलवा परास जइसन गोरी के चूनरिया
अँगिया बड़ा गोटेदार
अंग – अंग बिहँसति फुलवा गुलाब जस
बिहँसति घरवा दुआर
लाल गाल....... गुजरिया।

गोरिया झुमेले जवानी के मातल
ऊपर से बसंती बयार
नाही चिन्हे बड़ जेठ,सुने ना बतिया
सभका के देत लसार
लाल गाल .... गुजरिया।

❑❑

❍ राँची झारखंड

लालबहादुर चौरसिया "लाल"

डोले पुरबी बयार

डोले पुरबी बयार डोले पुरबी बयार।
फागुन के मस्त महिनवाँ में।।

सरसों के फुलवन से महकल सिवनवाँ,
चनवाँ फुलायल त चहकल गगनवा,
फुले फूल कचनार,फुले फूल कचनार।
फागुन के मस्त महिनवाँ में।।

अमुवाँ की बगिया से कुहके कोइलिया,
चहुँ ओर गूँजल बा फगुआ के बोलिया,
मन झूमें हमार, मन झूमें हमार।
फागुन के मस्त महिनवाँ में।।

कलियन पऽ देखा ई भंवरा लुभाइल,
धरती कऽ धानी चुनरिया रंगाइल,
सोहे घरवा दुआर सोहे घरवा दुआर।
फागुन के मस्त महिनवाँ में।।

❑❑

❍ गोपालगंज,आजमगढ़,
PH—9452088890

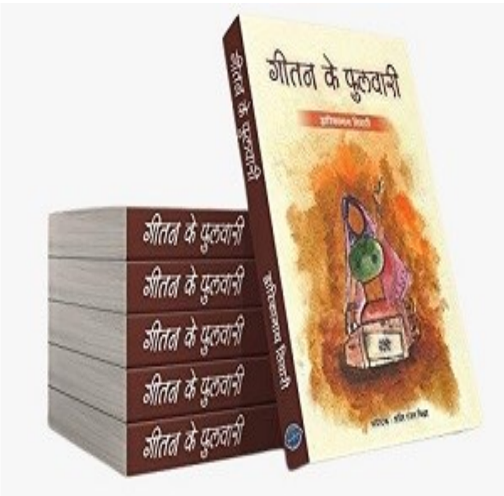

हरिओम हंसराज

फगुआ के फुहार

चैत के चटक धूप देखि के मनवा भइल बिहोल
मड़ई ओसारी गूँजे लागल बाजे लागल ढोल।
केसरिया रँग चहके लागल अमवा भइल सराबोर
सगरो टोला उमड़ि पड़ल बा उमंग बा चारो ओर।

अबीरि गुलाल के उड़त गर्दा भइल गगनवा लाल
ताल मृदंग पर थाप पड़ल ते बदल गइल सुर ताल।
बुढ़ऊ बाबा खैनी मलत छोड़ि देहलन घर दवार
तनी तनी ताड़ी चढ़ल ते, कइलन फगुआ रार।

भाभी खेलस देवर संगे मारि के रँग के बाल्टी
हँसी ठिठोली अइसन लागे जइसे सजल बा पार्टी।
साड़ी भींजल चोला भींजल भींजल मन के कोना
आजु ते सभे एक रँग भइल का चाँदी का सोना।

सड़ई बइरी भुला के सभे बाह में बाह पसारे
दुश्मन के भी अबीर लगइहें ठाढ़ होके दुआरे।
माटी के ई सोंध महक अउर महुआ के मदमाती
भोजपुरी के आन बान बा ई गँवई परिपाटी।

मालपुआ अउर दही बड़ा के सगरो महक छुआयल
बड़की चाची के कड़ाही में पुआ खूब छनायल।
लइका बुतरू पिचकारी ले गलियन में हुड़दंग
मचले बा आफत अइसन कि चढ़ल फगुनवा रँग।

परदेसी भी लौटि आइल बा छोड़ि के आपन काम
गाँव के माटी चुमे खातिर कइलस ई इंतजाम।
माई के ओ आंचल के ममता बाबू जी के दुलार
होली के दिन मिलि जाला बस पुरखा के आसीरबाद।

साँझ भइले जइबे जब सभे सारा रँगवा धोइ
बाकी नेह के रँगवा मन से कबहूँ कम ना होई।
हमनी के ई रीत पुरानी जुग जुग चले ई खेल
होली के ई पावन अवसर बढ़ावे मन के मेल।

❑❑

❍ सारण, बिहार

आकृति के बयार

आकृति विज्ञा 'अर्पण'

आव कि होइ जाई होरी

लिहले नवरंग अबीर
आव कि होइ जाई होरी
झूमत मधुर समीर
आव कि होइ जाई होरी

जियरा जरावे हो फगुनी फगुनी बयरिया
छन छन मने उठे गंग माई के अररिया
तड़फे बिरहा सरीर
आव कि होइ जाई होरी

खेतवा में सरसो स भरेले उतान हो
लहरतारा के पोखरा में उतरल चान हो
तोहके जोहेले कबीर
आव कि होइ जाई होरी

❑❑

.एगो महुआरी चैती

महुआ बीनत हम थाकीं हो रामा
ननद असकितही

कहनी ननद तनि महुआ बिनाई द
महुआ बिनाई द, तनि बियवे फोराई द
ऊ ते हाय जंगरा चोरावें हो रामा
ननद असकितही

कहनी ननद तनि खैका रिन्हाई द
खैका रिन्हाई द,ना त हथवे बँटाई द
उते हाय इन्स्टा चलावें हो रामा
ननद असकितही

कहनी ननद मोर हथवा दबाई द
हथवा पिराला मोर मथवा दबाई द
उते हाय अँखियाँ देखावें हो रामा
ननद असकितही

कहनी ननद तोहर गवना कराई देब
गवना कराई देब, नइहर छोड़ाई देब
सासू जी से लवना लगावें हो रामा
ननद असकितही

❑❑

कुछ मुक्तक :

1.बूझीं ना बेहवार जगत के
ना जानीं सिंगार जगत के
एतना बाकिर जानीले कि
हम नारी आधार जगत के

2.आँसू से जे काजर पारी जेकरे मन के भरल बखारी
सुभे मनावे नेह लुटावे ऊ गीतन के राजदुलारी

3. सीना पर ते चढ़के मरिहे रे ललमुनिया,ते न डरिहे
जो दुस्सासन हाथ लगावे सबसे पहिले आँख निकरिहे

4.माटी के ढोका जिनगी, चट्टा नीयन फटि जाई
जहिया गदराई पाप के खेती, चरी ज इसे कटि जाई
ठीक बा खेल खेलौना जइसे जनि करीह लकड़ी लौना जइसे
एक चिनगीया बहुते होला जरि सगरो लंका पटि जाई

5.साँच से जेके आँच न आवे ,ओह तेवर के फूल बनब
दुखियन के जे सुख बरसावे ,ओह जेवर के फूल बनब
समय रंध्र में गंध बिना भी , साँच पटोरा के हम बानी
जीवन फागुन त्याग सके जे, ओह सेमर के फूल बनब

6.सुभही पीढ़ी गले लगाईं/अगली सीढ़ी गले लगाईं
पुरखन क जिम्मेवारी ह/नवकी पीढ़ी गले लगाईं

7.समय के लिक्खल पाती ह
सौंपल दीयना क बाती ह
ई जीवन हमनी के भागी
पुरखाजन क थाती ह

8-अपरिमित देह एक मूरत ,जेके आधार के सुख बा
कुल्ही मोर भाव स मूढ़ा, एहाँ बेवहार के सुख बा
हमें लागे इहे हरपल ,सरलतम स्रोत तू सुख के
तुहरे ध्यान में प्रियतम,सकल संसार के सुख बा

❑❑

कृष्ण, मैकाइवर आ प्रेम

आकृति विज्ञा 'अर्पण'

परकास बहू पालक के पतई बीनत अपना जेठानी से कहली कि जीजी पढ़ा के आइले त कालेज के बात भुला जाइल करीं । आराम से खाईं पीईं आ सूति जाइल करीं । आप आ भईया बिन बात के रोज झगड़ा करीले,एहकर असर आपके स्वास्थ्य पर होत बा। एकदम झुराइल जात बानी। बड़को सुनके चुप रहली। फिर चाय के प्याला उठावत कहली कि छोटको तुहार संसार किचन ले बा एहसे तू ना समझबू। एगो विद्वान मैकाइवर कहलन कि सामाजिक संबंधन के जाल समाज हवे । हम समाज ही सब्जेक्ट नीयन पढ़ाईले, हमके सौ ताम झाम रहेला। लोग भेड़िया नीयर पीछे पड़के हमके भी तेज बना देहलस। दिन भर हमरे दिमाग में विभाग चल. ला। तोहार भईया के लगेला कि हम ढेर सोचीले, हमके धर्म सीखावे लगेलन।

तोहरे भैया के याद रहेके चाहीं कि धर्म के सबसे चर्चित बिंब कृष्ण के सामाजिक मसलन पर ही हमार पीएचडी बा।

छोटको तनी सा मुस्किया देहली।

बड़को कहली कि का भईल ,कवन बात पर मुस्कियात बाडू। छोटको टाले लगली बाकिर बड़को जिदियाये लगली।

छोटको पालक के थरिया किनारे रखि के बड़ा नेह से बड़को के दूनो हाथ पकड़ि के कहली जीजी हम मैकाइवर के त ना जनतीं बाकि कृष्ण के बारे में सुनले बानी। आपते ओही पर पीएचडी बानी मने ढेर जानीले ,और आपके जीवन में प्रेम के ही सबसे ढेर अभाव बा। दीदी जिनगी के राहि त प्रेम से पार होले।

बड़को चुप होके अपना रुम में आ गईली। आलमारी खोलके आपन थेसिस लेहली आ पन्ना पलटे लगली, एक वाक्य पर ध्यान गईल "कृष्ण तत्व के झरला झूरला पे खाली प्रेम झरी।"

बड़को के मौन तूरत कुकर के सीटी लगल आ छोटको कहली ,दीदी कालेज से केहूके फोन आवत बा।

बड़को कहली जायेद, फोन वोन छोड़ि द। आज हम पोहा बनाईब। तू बतईह कि तोहार भईया ढेर बढ़िया बनावेलन कि हम?

छोटको बड़को दूनो जनी मुस्कियाये लगली, पल्ला लगे ठाढ़ बड़के भईया हैरत से देखत रहि गईलन।

❑❑

❍ गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

गीता चौबे गूँज

तिरिया जनम जनी दीह विधाता

'' आ रे ए हुलसिया, आरे कातना हँसेलिस रे.. . लइकिन जात के आतना ना हँसे के चाहीं... ।''

''काहे नानी? हँसी–खुसी जीवन बितावल त नीमन ह नू... ईस्कूल के महटरनी जी कहेली कि हँसला से देह में खून बनेला... आ तूं कह तारी ना हँसे के... ''

'' का कहीं बचिया... जमाना के हवा नू खराब हो गइल... हँसला के का जानि कवन मोल चुकावे के पड़े '' कह के कलसी देबी ऊ दिन इया द करे लगली...

केतना खुस रहे उनकर बेटी झलकी ओह दिन। ओकर बियाह ठीक हो गइल रहे जवारे के बिसेसर से। एके लइका रहे आ कइअक बिगहा खेत रहे ओकरा हिस्सा पऽ। नामी खानदान रहे।

झलकी आपन सहेली साथे हँसत बतिआवत आवत रही। सांझ के आन्हार हो गइल रहे। अचके में दू गो गुंडा गमछा से मुंह बान्ह के लइकिन के घसीट के खेत में खींच लेलन सन। झलकी के सहेली कसहूं छोड़ा के भाग आइल आ रो–रो के सब कहानी बतवलस।

सभे धावल गइल त देखल कि झलकी बेहोस औंधे गिरल बिया। ओकर हँसी लूटा गइल रहे।

जंगल के आग नियन ई खबर समधियाना फइल गइल। ऊ लोगन रिस्ता तूर देलन जा। कसहूं मर–मर के दिन काटत रहे झलकी। नौ महीना के बाद एगो लइकी के जनम दे के झलकी के परान छुट गइल। जनमतुआ लइकी के देख के कलसी देबी कपारे हाथ धऽ ले ली बाकी ऊ लइकिया आतना हँसमुख रहे कि ओकर नाम हुलसिया पर गइल। एकरे मुंह देख के जीए लग. ली बाकी कबो–कबो एकर हँसी से पुरनका बात इयाद आवेला त डेरा जाली आ कहे लागेली कि तिरिया जनम जनी दिह बिधाता... ।

❑❑

❍ बेंगलूरु

दू गो गीत

डॉ अशोक द्विवेदी
संपादकः पाती

बसंत ऋतु रंग भरे

रस छलकेला अँखियन–जोत
बसंत रितु रंग भरे ।

सिहरेला टुसवा /उठेले फुरहुरिया
डोलेले जब जब फगुनी बेयरिया
कवना भार से ओलरल डाढि
कि झर झर फूल झरे ॥

चितवे सुरूज जब /जाये के बेरिया
अमवा से झाँके, लजइनी मोजरिया
लेके हरियर पतियन – ओट
मदन , धनु – बान धरे ॥

चंचल बेयरिया /बड़ी लकुराधी
तूरेले जोगिया के तपल समाधी
जइसे टूटेला बान्हल बान्ह
रुकल जल टूटि परे ॥

उजरे – उजर लागे / सगरी बखरिया
दीपेले रुपे क टहटह अंजोरिया
मोरा अँगना मे उतरेला चान
चननिया क कलश ढरे ॥

रस छलकेला अँखियन – जोत
बसंत रितु रंग भरे ।

❑❑

चइतवा बड़ निक लागे

अँतरा लुकाइल अन्हरिया
चइतवा बड़ निक लागे।
टह टह , टहके अँजोरिया
चइतवा बड़ निक लागे।

झपसल डाढ़ि, हँसल अमरइया
झाँवर मुख पर चढ़ल गोरइया
झूमल घन बँसवरिया
चइतवा बड़ निक लागे।

धइले मोजरिया के,नन्हका टिकोरवा
जस, दुधकटुवा छोड़े न कोर वा
कतनो चढ़े दुपहरिया
चइतवा बड़ निक लागे।

मन मधुवाइल, तन अलसाइल
नव सिरजन के, रंग रँगाइल
नीक ना लागे कोठरिया
चइतवा बड़ निक लागे।

टह टह टहके अँजोरिया
चइतवा बड़ निक लागे॥

❑❑

❍ वाराणसी (उ०प्र०)

शैलेन्द्र पान्डेय शैल

देखु सखी फागुन आइल बा

देखु बसंती फिरू मधुआइल
गदराइल तन मन आइल बा
देखु सखी फागुन आइल बा ...

केतने सपन सजवली धरती
बरिस बरिस गोहरवली धरती
साध सोनहुला भरि भरि अंचरा
डीह डिहवार मनवली धरती
बाटि जोहत अंखिया पथराईल
तब अंगना पाहुन आइल बा
देखु सखी फागुन आइल बा ..

हरियरकी चुनरी में सरिसो
अलसी फूल जडावल बाटे
दुलहिन बिटिया का माँगी में
सुरुज चान सजावल बाटे
राग सोहाग सुनावे बखरी
कोइली बनिभाटिनिआइलि बा
देखु सखी फागुन आइल बा ..

लछिमिनिया माटी के सगरी
अन धन से भंडार भरल बा
तरवे तरवा लछ बछ लोटे
खुशियन के अंकवार भरल बा
दउरा सजले पाहु ँबाँटे
पुरवईया नाऊनि आइलि बा
देखु सखी फागुन आइल बा ..

❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

केहू आइल

डॉ सुनील कुमार उपाध्याय

फिजा में छिड़ल रागिनी
केहू आइल फिजा में छिड़ल रागिनी
ओट घूंघट से झांके मुंड़ल कामिनी।

छेड़े कंगना यमन थाट कल्यान के
निरेग गरेसा मन हरे ध्यान के
जइसे संझा दीया हाथ ले भामिनी
केहू आइल ———————

पग के नूपुर के झनकार अइसन लगे
सारेग पधसा बस भुपाली जगे
रात दूसरे पहर आवे दुखहारिनी
केहू आइल —————————

धानी चुनर फहर जाला पुरवाई से
थामे घूंघट डेरा जाले रूसवाई से
राग काफी बजे फाग मनहारिनी
केहू आइल —————

तन के खुशबू लगे इत्र छितरा गईल
पाके चितवन सुघर केहू इतरा गईल
गूंजे रागो पहाड़ी हंसे दामिनी
केहू आइल ——————

मोहनी ई मुरतिया लगे देस ज्यों
राग दरबारी के ऊ धरे भेस ज्यों
जईसे रागन के लेके चले सारिनी
केहू आइल ————

मांग सेनूर महावर लगल पांव में
जइसे कवनो सोहागिन चलल गांव में
भैरवी के महक लावे भवतारिनी
केहू आइल ——————

❑❑

❍ पूर्व प्राचार्य, एल. पी.शाही
कालेज, पटना

अइले बसंत

डॉ हरेश्वर राय

अइले अइले बसंत बाह बाह
हसीं जा हाहा हाहा।

तिसिया फुलइली मटर गदराइल
झुंड तितिली के उड़ेला इतराइल
बनल भंवरा बनल बदसाह
हसीं जा हाहा हाहा।

आम मोजरइले कली मुसुकइली
कंठा में मिस्री कोइल लेइ अइली
भइली पुरवा बड़ी नखड़ाह
हसीं जा हाहा हाहा।

हरियर चहचह भइली बंसवरिया
सरसों के रंगवा रंगइली बधरिया
होता भुईं सरग के बिआह
हसीं जा हाहा हाहा।

❑❑

❍ सतना (मध्य प्रदेश)

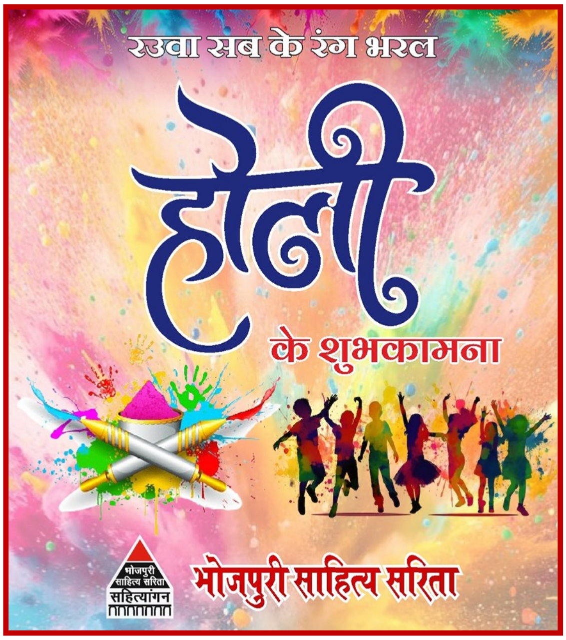

प्रकृति से खेलवाड़

सविता गुप्ता

कजरवटा मेघवा से
टिप टिप पनिया से
धरती के मिलन से
जल के भंडार भरे।

रोक लऽ जल के
बाँध लऽ कल के
धरती के छाती भरी
नीर अमृत मेघ से।

प्रकृति खिलवाड़ से
सीमेन्ट के जंगल से
कठोर सजा मिली
चिंता करऽ अभीये से।

भविष्य के पूँजी बा
हमनी के हाथ में।
जिंदगी सुधर जाई
कुछो नइखे जात पात में।

जीवन संवर जाई
मजबूत नींव खोदाई
चलऽ पानी बचाई
भविष्य सुरक्षित होई।

❑❑

❍ राँची झारखंड

आयल जगावे फगुनवा

उमाशंकर शुक्ल दर्पण

जागा जवान अरे जागा किसान
आयल जगावे फगुनवा,
रंग बिरंगा है नेहिया के बान
आयल जगावे फगुनवा।

सुगना जगावे कोयलिया जगावे
गेहुंआ के बाली पे नाच दिखावे,
भौंरा जगावे ला गावे हो गान
आयल जगावे फगुनवा।

वीरों का मौसम है, वीरों का चोला,
देखि वसन्ती जिया मोरा डोला।
जय बोला जवान, जय बोला किसान,
आयल जगावे फगुनवा।

जागा जवान अरे जागा किसान
आयल जगावे फगुनवा।
रंग बिरंगा है नेहिया के बान
आयल जगावे फगुनवा।

❑❑

❍ अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश

बसंत

सन्नी भारद्वाज

कह गइले आइ जाइब काल परसो रे देखे
लाठ पर गोताइल बा पियर सरसो रे देखे।

छतिया के बतिया कुल्ही रतिया मे कहती
जनती न आइब त हम इहवा न रहती
हुक देला अंगड़ाई कहेला तरसो रे देखे
लाठ प गोताइल बा पियर सरसो रे देखे

पूस रूख सूख दुख ,देहलस ना कहनी
माघी मलघार चुवल इहवे न रहनी
बहे फगुनहटा त जरे जरसो रे देखे
लाठ प गोताइल बा पियर सरसो रे देखे ।

कान रोज तान सुनी बाटे सकोताइल
कवने सवतिया प पियवा मोहाइल
दईया मुदईया काहे फरार घरसो रे देखे
लाठ प गोताइल बा पियर सरसो रे देखे ।

कह गइले आई जाइब काल परसो रे देखे
लाठ प गोताइल बा पियर सरसो रे देखे

❑❑

❍ कैमूर (भभुआ) बिहार

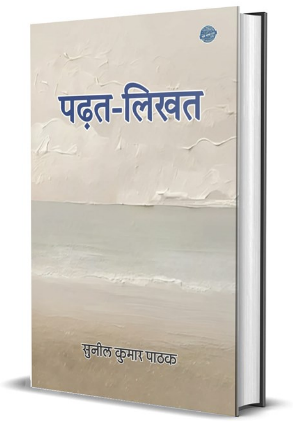

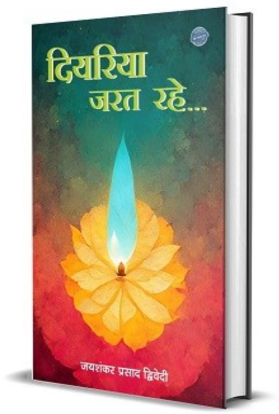

भुलरू बाबा के रहस्य

बिम्मी कुंवर सिंह

गाँव में एकहि गो नाव सभकरा बतकही पर चढ़ल रहे, उ रहे भुलरू बाबा के नेकी आ दान धरम ।
लोग बाग कहत रहले कि ऊ साधारण मनई ना, देवता के रूप हउवन।
पाँच गो भाई में तिसरका, आ चालीस बरिस के हो गइले बाकिर बिआहो ना कइले आ ऊपर से विद्वान आ दानी।

गांव में बाबा के बाबू जी स्कूल खोलले रहले। बाद में पक्का बनल आ सरकार से मान्यता भी मिल गइल। प्रिंसिपल आ सीनियर मास्टर खुदे भुलरू बाबा रहले।

भुलरू बाबा के जिनगी स्कूल के लइका–बच्चा से मीठ बोलत, गरीब–गुरबा के घर अनाज भेजत, मठ–मंदिर में चंदा देत बीतत रहें।

लोग कहत ना अघाए कि,
''अइसन करम आ सेवा त आज के जमाना में बिरले देखे सुने के मिलेला।"

बाकिर, देवता के ई चमचम छवि के पीछे एगो गाढ़ अन्हियार लुकाइल रहे।

गाँव के ओह स्कूल में जब–जब नयकी अंग्रेजी मास्टरनी अइली जा, छमासे भीतर उनकर लास मिले लागल।

कबहुँ खेत किनारे, कबहुँ बीच आंगन के तोपल भूतहा कुंइआ में।
मजेदार बात इ रहें कि बिना पुलिस रपट के भुलरू बाबा के घर के लोग ओह लास के गांवे में जरा देत रहले।
केहू के हिम्मत ना पड़ल कि सवाल उठावें।
गाँव भर के पेट आखिरकार बाबा के रहमो–करम प टिकल रहुवे।
इ घटना हमरा आँखि के आगहि घटल रहे। बीतत अक्टूबर के महीना रहे, गुलाबी जाड़ा चहुँदिस छवाइल रहे।

ए बरिस हमार सखी पुष्पा के मउसी बाबा के स्कूल में अगरेजी पढ़ावे आइल रहली।

गाँव में हलचल मच गइल,
खूब गोर–सुग्घर नाक नक्शा, सहरिया रहन–सहन वाली मास्टरनी।

गाँव वाला काने कान फुसफुसात कहे लोग कि,
"देखिहऽ, इ हो छः महीना से बेसी ना टिकिहे।"

बाकी अबकी बात कुछु अउर रहे, उ नवकी अंग्रेजी के मास्टरनी के नाता बाबा के घर से जुड़ल रहे। ऊ भूलरू बाबा के छोट भाई के साली रहली।
एह से कबहू–कभार बाबा के घर में भी ठहर जात रहली।
घर बड़का हवेली जइसन रहे –माई–बाबू, चार गो भाई–भौजाई, दसन गो भतीजा–भतीजी से भरल पूरल। केकरो करेजा में शक जागिए ना सकते रहें।

छः महीना त सब ठीक–ठाक चलल। बाकिर छमासे बीतल कि बइसाख जेठ के भोर में दिसा–मैदान खातिर नहर के ओर गइल लोग हाला कइले कि, एगो मेहरारू के उघार देह लास बधारि में पड़ल बा। चीन्हें वाला चीन्ह गइले कि उ लास नयकी मास्टरनी आ पुष्पा के मउसी के ह।"
गाँव भर के चेहरा पीयर पड़ गइल। बाकिर बोलें के हिम्मत अभियो केहू में ना रहे।

लोग–बाग बुझ गइले कि अब का होखे वाला बा।

बाबा के घरवाला लोग जल्दी–जल्दी लास जरावे के परबंध करें लागल ।

उहे पुरान डायलॉग कि "गाँवे में जरा दऽ, सगरी बात खतम।"
बाकिर ऐह बेर त मामिला अलग हो गइल रहें।
अध्यापिका के माई–बाबू शहर से गांवे आ गइलें आ गरज उठलें लोग,
"ना, इ लाश ना जरि, पहिले पोस्टमारटम होई। हमरा बेटी के मौत के सच्चाई त पता चले।"

गाँव के पंचायत हिल गइल, क गो मेहरारूअन आ उनकर मनसेदू के सेराइल करेजा के आगि फेर से धधा गइल।

भूलरू बाबा के चेहरा सख्त हो गइल रहें। भाई–भतीजा मय एकवट के मास्टरनी के माई बाबू के गरियावे लगलें।

तले पुलिस भी चहुप आइल। पूछताछ , हो–हंगामा होत रहे, बाकिर बाबा के रसूख के आगे मुढ़ी नेवा लिहलस। पुलिस आपन पाकिट बरियार क के ओजुग से लास लेके अभी निकलते रहें तले बाबा के भवह के चिचिआए के आवाज से मय मरदान लोग के गोड़ तर के धरती खसक गइल।

गाँव दू फाड़ में हो गइल रहें। छोटकी कनिया के संगे मय कमकरीन, बनिहारिन आ एक दूगो पढ़ल लिखल नवकी कनिया भी रहली जा।

बाकिर नरभक्षियन के झुंड में गाय–बकरी के कवन बिसात रहें। मालिक मलिकार हांक के फेर से घर के भीतर क देले।

गांव में जहवा बाबा के मर्जी के खिलाफ एगो पत्ता ना डोलत रहे आज उनकरा बारे में अनाप–शनाप बोले खाती हिम्मत जुटल, इहे बहुत बड़ बात रहे?

कुछ महिनन तक बाबा के आंतक गांव के उ कुल घर प गाहे–बगाहे बरसल जे उनकरा खिलाफ आवाज उठवले रहें।

जेकरे दया धरम से घर के चूल्हा जरत रहे, उ क घरी रार करित?
मय मामिला घर के भीतर बस फुसफुसाहट भर रह गइल।

कुछे दिन बाद गांव में नया कोहराम उठल। भूलरू बाबा के भवह, जे मास्टरनी के बहिन रहली, गते–गते पगली लेखा हरकत करें लगली।

कबो पूजा–पाठ में घरे आइल हीत–नात आ गांव घर के मेहरारूअन के बीच में बइठ के अनायासे बोले लागस,
''जान तानी जी, स्कूल से सटल कोठारी आ हई बीच आंगन के कुइआ३इ मय रहस नइखे, ओकरा में भुलरू के बड़का कारस्तानी बा''

''जेतना कमकरिन, मेहरारू आ लइकीं भुलाइल बाड़ी सन... सभकर घिघिआइल आ रोआइ ऐही कुइआ में अमा गइल बा।''

लोग भक्क मरले इ बात सुनें।

कबो राति के छत प से चिचिआत रहली,
"हम देखनी ह, मय उहे कइले बा३ भूलरू, पिशाच ह, सभकरा के इहे मरले बा...!"

कुछ दिन बाद उनकरा के घर में रसरी में बान्ह के राखल जात रहें।

मध्य रात में हवेली से बड़ा दर्दनाक चीख उठत रहे। जइसे केहू के गरदन रेतल जात होखे

भुलरू बाबा के देवता माने वाला कुछ गाँव के लोग कहे कि,
"पगली हो गइल बाड़ी कनिया, भूत–प्रेत के हवा लाग गइल बा।"

हवेली के भीतरी के बात बाहर तक ले आवे के काम घर के नौकर–चाकर के ही रहे। बाकिर अब उहो लोग उनकरा के घर में ना देखत रहूंअन। इहो चर्चा के बात रहें।

धीरे–धीरे उ घर में ही कैद क दिहल गइली।

महिना–दर–महिना उनकरा के केहू देख ना पाव. ल। फेर अचानके चार महीना बाद, गूलर के डार प उनकर लास लटकल मिलल।
राह चलत लोग कनिया के लास देखि के चिहा गइले। बुझात रहें कि कनिया के मुँह प अभियो उहे गीत अटकल रहे जवन उ राति के छत के मुंडेर प बइठ के गावत रहली,
''मुंह खोलनी त काला पानी... सहत रहली त रहनी महारानी...''
गाँव भर में अइसन सन्नाटा पसर गइल रहे, जइसे सब कुछ थथम गइल होखे।
भर गांव दउड़ल आइल, जेतना मुंह ओतने बात होत रहें,
"पगली आपन जान दे दिहलस।"

केहू फुसफुसाइल,
"पगली कुआं में कुदी, कि गूलर प रसरी से फांसी लगा लिही?"

श्मशान घाट प घर के लोग जुटल, ओजुग भूलरू बाबा भी चुपचाप खड़ा रहलें। उनकर चेहरा रहस्यमयी गंभीर भाव से भरल रहे।

कनिया के लास बिना पुलिस रिपोर्ट आ बेपूछताछ के जरा दिहल गइल।
केहू के हिम्मत ना जुट पावल कि ऊ भूलरू बाबा से कुछू पूछस।

भूलरू बाबा, जिनकरा के बहुत घर में पूजल जात रहें, ऊ देवता आ दरिंदा के बीच के रहस्य बन के रह गइले।
उनकर रहस्यमयी कथा आजो गाँव के लोकगीत आ कहावत में गुँथल बा, जवन सालों–साल तक फुसफुसात रही।

❑❑

❍ **धुबरी, असम**

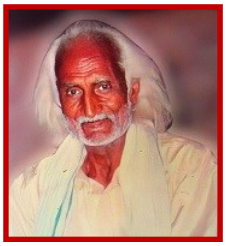

रामजियावान दास 'बावला'

सखि फागुन आइल

सगरी सरेहिया रंगाइलि हो, सखि फागुन आइल
खेतवा मटर गदराइलि हो, सखि फागुन आइल॥

पिया परदेसिया क सुधिया सतावइ
बोल कोइलरिया क कहर ढहावइ
अमरइया बउराइलि हो, सखि फागुन आइल।

दूधवा में रतिया चननियाँ नहाले
खोरी खोरी होरी होय गीत मुसुकाले
फुटही ढोलकिया मढ़ाइलि हो, सखि फागुन आइल।

रस बरिसावे मधुमास के बेयरिया
बिरमल जाने कहाँ बावला साँवरिया
सपना पर सपना टंगाइलि हो, सखि फागुन आइल।

घुमरइ लेइके तितिलिया संघाती
बहसल रसिया भँवर उतपाती
उखिया सवत कजराइलि हो सखि फागुन आइल॥

❑❑

❍ **भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)**

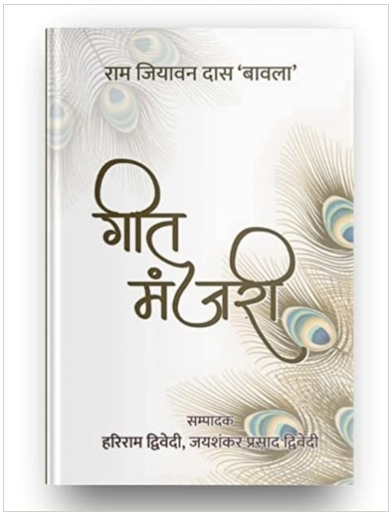

भासा, सत्ता आ वर्चस्व : हिंदी थोपल आ भोजपुरी के हाशियाकरण के भासाई विमर्श

डॉ.संतोष पटेल

प्रस्तावना

भासा खाली बात–चीत के माध्यम ना ह, बल्कि ई सत्ता, ज्ञान, संस्कृति आ अवसर के संरचना से गहराई से जुड़ल रहेला समाजशास्त्री पियरे बोर्दियू भाषा के "भाषायी पूँजी" (Linguistic Capital) कहत बाड़न, मतलब जे भाषा के संस्थागत मान्यता मिल जाला, उहे सामाजिक प्रतिष्ठा, नौकरी आ संसाधन तक पहुँच के साधन बन जाला (Bourdieu, 1991)। एह दृष्टि से देखल जाए त भारत जइसन बहुभाषी देश में भाषा के प्रश्न सत्ता–विमर्श से अलग ना कइल जा सके।

दक्षिण भारत में हिंदी के थोपे के विरोध आ उत्तर भारत में हिंदी द्वारा भोजपुरी जइसन लोकभाषा के हाशियाकरण–ई दूनो परिघटना भाषा आ सत्ता के अंत. संबंध के गहिर समझ देला।

भाषा आ सत्ता के संबंध

रॉबर्ट फिलिप्सन "भाषायी साम्राज्यवाद" (Linguistic Imperialism) के सिद्धांत देत कहलें कि जब राज्य, शिक्षा, मीडिया आ प्रशासन के सहारे कवनो भाषा दूसर भाषा पर वर्चस्व स्थापित कर लेवेला, त ऊ साम्राज्यवादी रूप धारण कर लेवेला (Phillipson, 1992)।

एह सैद्धांतिक पृष्ठभूमि में हिंदी के स्थिति द्वंद्वात्मक दिखेले। एक ओर ऊ राष्ट्रीय एकता के भाषा ह। दोसरा ओर कई क्षेत्र में सत्ता–प्रभुत्व के भाषा के रूप में अनुभव कइल जाला।

दक्षिण भारत में हिंदी थोपे (impositiom of Hindi) के विरोध

1. **प्रशासनिक वर्चस्व के डर**

जब केंद्र सरकार के दफ्तर, बैंक, रेलवे, प्रतियोगी परीक्षा आदि में हिंदी के बढ़ावा मिलल, त दक्षिण भारत में ई आशंका पैदा भइल कि हिंदी भाषी लोगन के सरकारी नौकरी में बढ़त मिल जाई। एहसे अवसर के समानता पर प्रश्न उठल।

2. **सांस्कृतिक अस्मिता के सवाल**

तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आ मलयालम ई सभे समृद्ध साहित्यिक परंपरा वाली भाषा ह। द्रविड़ चिंतक पेरियार आ अन्नादुरै हिंदी विस्तार के उत्तर भारतीय सांस्कृतिक वर्चस्व के रूप में देखलें (Hardgrave, 1965)।

3. **द्रविड़ आंदोलन के भासाई राजनीति**

1937 में मद्रास प्रेसीडेंसी में हिंदी अनिवार्यता के विरोध से शुरू भइल आंदोलन 1965 में उग्र रूप लिहल। तमिलनाडु के राजनीति आजो "Anti &Hindi Imposition" के मुद्दा पर टिकल बा।

4. **संघीय बनाम एकभाषिक राष्ट्रवाद**

दक्षिण भारत के तर्क बा कि भारत के शक्ति बहुभाषिकता में बा, ना कि एक भाषा के प्रभुत्व में।

5. **अवसर के भाषायी असमानता**

UPSC बैंकिंग, रेलवे में हिंदी/अंग्रेजी के प्रभुत्व से गैर–हिंदी भाषी अभ्यर्थी के अतिरिक्त भाषायी बोझ झेले के पड़ेला।
एह तरह हिंदी के विरोध भाषा से बेसी सत्ता–संतुलन के प्रश्न ह।

उत्तर भारत में हिंदी के आंतरिक वर्चस्व

जवन हिंदी दक्षिण में आरोपित मानल जाले, उहे हिंदी उत्तर भारत में भोजपुरी जइसन लोकभाषा पर प्रभुत्व स्थापित करत दिखेले।

भोजपुरी : जनसंख्या में विशाल, सत्ता में अदृश्य

भोजपुरी करोड़ों लोगन के मातृभाषा हकृभारत, नेपाल, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम ले फैलल।

बाकिर शिक्षा, प्रशासन, न्याय, संवैधानिक संरचना में ओकर उपस्थिति नगण्य बा (Tiwari, 2004)।

हिंदी द्वारा भोजपुरी हाशियाकरण के आयाम

1. **उपभाषा घोषित करे के राजनीति**

खड़ीबोली आधारित आधुनिक हिंदी के "मानक" बनावल गइल। अवधी, ब्रज, मगही, मैथिली, भोजपुरी के "उपभाषा" कह दिहल गइल (Shapiro, 2003)।
एहसे भाषायी सत्ता हिंदी के मिलल, लोकभाषा के ना।

2. **शिक्षा से बहिष्करण**

भोजपुरी भाषी बच्चा घर में भोजपुरी बोलेला, स्कूल में हिंदी/अंग्रेजी पढ़ेला। एह स्थिति के भाषाविद् "Linguistic Displacement" कहेलन।

परिणामः

सीखल में कठिनाई
ड्रॉपआउट बढ़ल
आत्मविश्वास घटल
नई शिक्षा नीति मातृभाषा के बात करेला, बाकिर भोजपुरी माध्यम अबहियो स्थापित ना भइल।

3. **प्रशासनिक अदृश्यता**

सरकारी कामकाज हिंदी में–
भोजपुरी "अनौपचारिक" भाषा बन के रह गइल।
भाषा के वैधता ना होखे से जनता–सत्ता दूरी बढ़ेला।

4. **संवैधानिक मान्यता के अभाव**

भोजपुरी आठवीं अनुसूची से बाहर बा।

परिणामः

साहित्य अकादमी प्रतिनिधित्व ना मिलल
UPSC विकल्प ना
संस्थागत संरक्षण कमजोर

5. **जनगणना में समावेशन**

भोजपुरी भाषी अक्सर "हिंदी" में गिन लिहल जालन (Census of India, 2011)।
एहसे हिंदी के संख्या बढ़ेला, भोजपुरी के पहचान घटेला।

6. **रोजगार आ बाजार संरचना**

भाषा तब शक्ति बनेली जब ऊ आर्थिक पूँजी में बदले।
नौकरी → हिंदी/अंग्रेजी
मीडिया → हिंदी
प्रकाशन → हिंदी

भोजपुरी सांस्कृतिक रूप से मजबूत, आर्थिक रूप से कमजोर रह गइल।

7. **सांस्कृतिक हीनताबोध**

भोजपुरी के "देहाती", "मजदूर वर्ग" के भाषा बतावल गइल।
हिंदी के "सभ्य" भाषा के दर्जा मिलल। एहसे भाषायी आत्मगौरव कमजोर भइल (Pandey, 2010)।

8. **राजनीतिक प्रतिनिधित्व के कमी**

तमिल, मराठी, बंगलाकृभाषा आधारित राजनीति मजबूत।
भोजपुरी क्षेत्र में भाषा मुद्दा सीमित रहल, एहसे नीतिगत दबाव कम बनल।

भासाई लोकतंत्र के सवाल

भासाई लोकतंत्र के अर्थ बा–हर भासा के संस्थागत सम्मान।
अगर कवनो भासा शिक्षा, प्रशासन, न्याय से बाहर हो जाव, त ओकर भाषी भी सत्ता से दूर हो जालन।
एह संदर्भ में हिंदी के भूमिका द्वंद्वात्मक बा–
अंग्रेजी के वर्चस्व के विरोध में भारतीय भाषा
लोकभाषा पर प्रभुत्व स्थापित करे वाली शक्ति

समाधान के राह

1. भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल कइल जाए
2. मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा
3. बहुभाषिक प्रशासनिक व्यवस्था
4. जनगणना में स्वतंत्र पहचान
5. लोकभाषा साहित्य–मीडिया के संस्थागत समर्थन

निष्कर्ष

भाषा आ सत्ता के संबंध अटूट बा। दक्षिण भारत में हिंदी के विरोध सत्ता–संतुलन के डर से उपजल, जबकि उत्तर भारत में हिंदी स्वयं प्रभुत्वशाली बनके भोजपुरी जइसन भाषा के शिक्षा, प्रशासन आ संवैधानिक संरचना से दूर कइलस। भाषायी न्याय तब संभव बा जब–
ना कवनो भाषा थोपी जाए,
ना कवनो भाषा दबाई जाए।

संदर्भ

1. Bourdieu, Pierre. Language and Symbolic Power. Harvard University Press, 1991.
2. Phillipson, Robert. Linguistic Imperialism. Oxford University Press, 1992.
3. Hardgrave, Robert. The Dravidian Movement. Popular Prakashan, 1965.
4. Shapiro, Michael. "Hindi and the Politics of Language." 2003.
5. Tiwari, Uday Narayan. Bhojpuri Bhasha aur Sahitya. 2004.
6. Census of India. Language Data, 2011.
7. Pandey, Anil. Bhojpuri Lok Sanskriti. 2010.

❑❑

❍ द्वारका, नई दिल्ली

विष्णुदेव तिवारी

'बिहारी मजदूर': एगो कविता: एगो व्याख्या

(पछिला अंक से आगे)

(III)

पेट के जरने आ एगो निश्चिंता जिनगी जीए के हसरत पूरा करे खातिर ई पलायन लगातार चलत रहल। गणतंत्र के जननी बिहार में यदि दुर्दशा भइल त' जने के। तंत्र के काईंपना त' हर जगहा मिल जाई, एकर कसाईपना बाकिर, एहिजा अस कमे जगह मिली। बात–बात पर दार्शनिक हो जाए वाला बिहारी समाजो एह मानवीय त्रासदी पर कबो फलप्रद बात ना कइलस। साहित्य के दुनिया में बात भइल, बाकिर अपना–अपना एजेन्डा के धार देबे खातिर। काव्य–संवेदना आ विवेक–चेतना के ऊँच धरातल पर अइसन कमे कविता रचइली स, जेमे मजदूरन के दरद–पीर रहे। जवन कमे रचइली स, ओमे डॉ मिश्रो के ई रचना शामिल बा– एकदम सपाट, स्पष्ट– जेकर अनेक अर्थ संभव नइखे। जीवन सत्य अनेकार्थी होइबो ना करे। खाँटी अभिधेयतो में श्रेष्ठ सर्जक अपना अनुशासित लेखनी से कुछ अइसन रच देला जे एगो नजीर बन जाला।

यदि डॉ मिश्र के एह कविता के साथे निराला के कविता 'भिक्षुक' के पढ़ल जाउ त' पता चली कि दुनिया बदलला के साथे आज रचनाकारो के बहुत कुछ अइसन बदल चुकल बा भा बदलवा दिहल जा चुकल बा, जे सर्जना खातिर नीक ना कहा सके। ई बदलाव जीवन के स्वाभाविक बदलाव ना ह। निराला 'भिक्षुक' में कहत बाड़े–

> ठहरो! अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा
> अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
> तुम्हारे दु:ख मैं अपने हृदय में
> खींच लूँगा।

मजदूरन खातिर अइसन बात डॉ मिश्र चाहियो के नइखन कह सकत। नव क्लासिक युग के

प्रसिद्ध कवि एलेक्जेन्डर पोप कहले रहले– ‘जहाँ अज्ञानता आनंद देत होखे ओहिजा ज्ञानी होखल मूर्खता बा।’ डॉ मिश्र, एही से, अपना एह कविता में अपना ओर से कुछुओ नइखन कहत। मजदूर लोगन के जवन हाल बा, बस ओतने सलीका से कह देत बाड़न। एह से बेसी कुछ कहिहें त’ अपना अज्ञानता के आनंद में मग्न लोग मए अस्त्र–शस्त्र लेके खाड़ हो जाई आ तब बात मजूरन से हट के जाति पर आ जाई।

जाति आ पंथ के नाँव पर आपन, अपना परिवार आ अपना हसबखाहन के हित साधेवाली पॉलिटिक्स भी बिहारी मजदूरन के अभाग पर यथोचित बात ना कहे, कुछ करे के बात त’ राजनीफिइलावाँ बा। तक पार्टी इनका में खाली आपन जिताऊ वोट चीन्हेले आ जाति आ धरम के नशा सुंघा के, इनकर वोट लेके, इनके फेर ओही गड़हा में पटक देले, जेकरा पाँकी में, अपना बापे–दादा के बेर से सउनात ई लोग आदमी नियर जीए–मुए के तमाम जतन करत आइल।

भारत के प्रायः मये राज्य में, हर औद्योगिक जगहा पर, बिहारी मजूरा लोग भागल जाले। ओहिजा जवन मिलल ओकरे में से बचा के माई, बहिन, बाप– पूरा परिवार खातिर जवन जूरल–आँटल कीनेले। डॉ मिश्र लिखत बाड़े–

पाई–पाई जोड़त
अपना भाग के कोड़त,
किनेलन स
माई खातिर चादर,
मेहरी खातिर लूगा,
बहिन खातिर फराक,
आ बाबू खातिर छाता।
बड़ा जतन से
जोगा के राखेलन स
चोर पाकिट में
रेहन धइल
खेत छोड़ावे खातिर
रोपया।
डिब्बा से छत ले
बहरी–भितरी
लदाइल–कोंचाइल
बिहारी मजदूरन से
पाटल
एक्सप्रेस
सीटी मारत
धर लेवेले रफ्तार।

अइसनो नइखे कि मजूरा लोग रेलिए में लदाइल–कोंचाइल बा। जहाँ ई लोग रहेला, ओह जगहो के हाल रेल के डिब्बे अस बा। ओहिजो एगो छोट कोठरी में, कई–कई लोग पटरा परल देखल जा सकत बा। खाए–पीए, नहाए–धोएदृ सबके दिकदारी, सब खातिर मारा–मारी। का ई सोंचे के बात नइखे कि बिहार में कवनो उद्योग धंधा काहें नइखे?

हमनी के शास्त्रीय ग्रंथन में कवि के प्रजापति कहल गइल बा, एह से कि ओकर सृजन मर्यादा के भीतर एगो अइसना लोक के दर्शन करावेला जे यथार्थ त’ होइबे करेला, आदर्शो होला। तुलसीदास, एही से, कविता के सुरसरि के समान सबका खातिर हितकर कहले। आज नूँ तुलसी बाड़े नूँ उनकरा बेर के घर–समाज। आज तुलसी के सर्वहित के अवधारणो के कवनो माने–मतलब नइखे। हित आज अइसन पाग हो गइल बा, जे अपने अनाज के तिलवा बान्हत बा। दोसरा के अनाज पागे के बेरा अदबद के भरक जात बा। आसमान के सुरुज आजुओ पूरबे से उगत बाड़े, बाकिर हमनी के हर उगेन पच्छिमे से होत बा। ग्लोबल विलेज के बात करे वाला लोग घर के माने मियाँ, बीबी आ आपन बाल–बुतरू से लगावत बा। मार्क्स संसार के मजदूर लोग के एक होखे के विचार देले रहले। बड़ा नीक आ क्रांतिकारी विचार रहे, बाकिर देश–दुनिया के देखा–देखी आ कुछ अपनो स्वारथ –मजबूरी, मजदूरो लोग एकल परिवार के होके रह गइल जहाँ बीवी देवी हो गइली आ माई–बाप उफर पर गइले। अइसना में डॉ मिश्र के ई कहल कि–

किनेलन स
माई खातिर चादर,
मेहरी खातिर लूगा,
बहिन खातिर फराक,
आ बाबू खातिर छाता।

सामान्य नइखे। यदि मानवता के तमाम पतन के बाद अइसन अपवाद कुछुओ रह गइल होखे, तबो कवि के इजहार मंगलप्रद बा, एमे शक के गुंजाइश नइखे। आधुनिकता के बाद उत्तर आधुनिकता जेकरा खातिर मुबारक होखे, होखे। कवि खातिर ओकर भारतीयता मुबारक बा।

‘पाई–पाई जोड़तध्अपना भाग के कोड़त’ में अभिधा से उगे वाली व्यंजना अइसहीं सुंदर लागत बा, जइसे स्वच्छ जल में उगल असित कँवल। ‘जोड़त’ आ ‘कोड़त’ के अनुप्रास करुणो में लालित्य के सर्जना कर रहल बा, जे घाव के सहाउर बनावे में मदतिहा हो रहल बा।

(IV)

औद्योगिक क्रांति से बहुत कुछ बदल गइल। एके जगह के ना, हर जगह के रीति–नीति, अधातम आ सोच बदल गइल। जेकरा पाले अकिल रहे, कुछ करे के कूबत रहे, लूटे के प्रवृत्ति आ अपना के सबसे सेसर साबित करे के टिसुना रहे, ऊ मैदान में कूद गइल आ मैदान मारे लागल। मार्क्स आ उनकर चेला लोग एह पर अनंत थीसिस गँजिआ दिहले, बाकिर उहन लोग के कहलका से तनिओ–मनी केनियो कुछ उजियाइल ना। सर्वहारा के अधिनायकत्व के जगहा एगो व्यक्ति(भा व्यक्ति समूह) आ एगो विचारधारा के अधिनायकी स्थापित भइल, जे जन के हित के नाँव पर खाली आपन हित कइल, जेकर चाल आ चरित्र हरमेस संदेहपूर्ण रहल। होलरी त' खूब भँजाइल, बाकिर मजदूर ओहिजे रहल रह गइले जहाँ ऊ क्रांतिपूर्व रहले। (एकर कुछ अपवादो जरूर रहल, बाकिर अपवाद उदाहरण ना होखे।) समृद्धि के छाँह ओकरे मिलल जे चालू रहे। सिधवा आ सोझिया लोग साम्यवाद के झंडा ढोवत रह गइले आ नयकी दुनिया के सपना देखावत धूर्त लोग अमरपद पा गइल। यूरोपीय तर्ज पर, भारतो में, कुछ भरल पेट वाला लोग–मनुवाद, ब्राह्मणवाद आ सामंतवाद–जइसन पद गढ़ले आ दोष व्यवस्था में ना, आस्था में बतलावत, ऊ हर कोशिश कइले जेसे उनकर, भ्रष्टता आ दुष्टता के विपरीत, शोभनउक छवि बेदाग रहे। अपना कुंठा के धार पजावत ई नवप्रभु वर्ग, जन के अस भरमवले कि ऊ(जन) अपना विवेक के तिलांजलि दे, इनकरा विचारधारा के बन्हुआ हो गइल।

ई उदम बदस्तूर जारी बा। अब त' कहल जात बा, कुछ जाति–वर्ग के अपमानित करे बदे देश– विदेश से फाँड़ भर पइसो मिलत बा। भोजपुरी कवि शशि प्रेमदेव, एह साँच के रेखांकित करत कहत बाड़े–

साँच के कइसे छिपावल जा रहल बा, देखि ल'
लाश पानी के चढ़ावल जा रहल बा, देखि ल'।
नीम, पीपर, ब'र के जबरन बताके बुर्जुआ
रेंड़ के माला पेन्हावल जा रहल बा, देखि ल'।

बिहारी मजदूर अपना तथाकथित नेतन के पायक बन के रह गइले। उनकरा मुँह से ई बकार कबो ना फूटल कि स्वतंत्रता के सत्तर बरिस से ऊपर बितला के बादो काहें उनकर हालत जस के तस रह गइल? काहें बिहार में कवनो कल–कारखाना ना खुलल आ जवन पहिले रहल, ओकर सत्यानाश हो गइल? काहें जब–जब पेट आ भूख के बात उठल तब–तब प्रभु वर्ग ओके जाति, धर्म आ धर्मग्रंथ का ओर मोड़ दिहल? काहें सत्ता आ संपत में भागीदारी कुछे खानदान, कुछे चुहान आ कुछे पेहान तक सिमट के रह गइल? काहें हजारन बरिसन से एही भूँइ से उत्पन्न होत, मातृभूमि खातिर जीअत–मरत, उच्च करतब करत आवेवाला आ सरकार के अधिकतम टैक्स चुकावे वाला वर्ग आ जाति समूह विदेशी कहाए लागल आ जे विदेशी रहे, भारत के रोआ–रोआ मरले रहे ओकरा संगे बइठ के चाह सुरुकाए लागल? काहें बिहारी लोग अपने देश में प्रवासी कहाए खातिर अभिषप्त भइले?

मजदूर अपना निजी दुःख के उत्पत्ति स्रोत के बारे में कबो ना सोचले। मतिमार लोग उनकरा के एह लायक छोड़बे ना कइल कि ऊ ई सब सोचस–विचारस आ जाति आ वर्ग ना, सत्य के नाँव पर कुछ सुंदर करे खातिर एक जगे जवरासु। एही से ऊ घरे आ बाहर दूनों जगह जिबह होत रहले।

साँच इहे ह कि कवनो वर्ग के नेता ओह वर्ग के मजूरन के अपना वोटर से अधिका कुछ ना माने। आकंठ भ्रष्टाचरण में डूबल रहलो पर ऊ जन– उद्धारक आ मसीहा के अपना खोल में सुरक्षित आ निहचिन्त रहेला। ओकर यात्रा विशिष्ट गगनयान भा रेलवे के फस्ट क्लास एसी में होला एह से रेल के जेनरल डिब्बा में भेंड़–बकरी अस लदाइल, अपना करम पर रोअत साधारण जन के दुर्दशा से ओकरा का मतलब?

बाकिर एगो सहृदय कवि करुणा से ओतप्रोत रहेला। ओकर मन दुःखी जन के दुःख से छपिटा उठेला आ ओकर लेखनी करुण जथारथ के अरथ देबे खातिर लरज उठेले। डॉ मिश्र के कवि मजदूरन के लवटानी के बेर के हाल कहत लिखत बा–

बिहारी मजदूरन से पाटल
एक्सप्रेस
सीटी मारत
धर लेवेले रफ्तार।)
जवना में/तरह–तरह के
बेमारी के जिवाणु/अपना देह में भरले,
चादर–लूगा–फराक–छाता
करेज से सटले/बड़ा कठोर साँसत में
जागत–उहाँत–सपनात
ठेलात–धकियावल जात/लतवँसल जात
सोनहुला बिहान के ललसे
लवटेलन स / बिहारी मजदूर।

अतना जलालत सहला के बादो मजदूर आशा के डँग नइखन छोड़त लोग। ई उनकरा जिजीविषा के परतोख बा, बाकिर ई आशा के सोनहुला विहान खाली आकाश कुसुम ह।

❑❑

❍ बक्सर , बिहार

रामसागर सिंह “सागर”

फगुआ कइसन?

नौकरी से रिटायर भइला के बाद गाँव जाये के खुशी कइसन होला, इ वंशीधर बाबू के चमकत चेहरा पर साफ साफ झलकता रहे! उहो जब गाँव में अब हमेशा खातिर बसे के इरादा बन गइल होखे, तब इ खुशी कई गुना बढ़ जाला! वंशीधर बाबू के जब से नौकरी लागल तब से उ बरिस में एक दु बार गाँव के चक्कर जरुर लगा लेस, बाकिर जब से लरिकन के पढाई मैट्रिक के उपर बढ़ल तब से उ तीन चार साल बाद ही गाँव के दरसन कर पावस, उहो कवनो शादी बिआह के अवसर पर ही! तीज त्योहार त गांव में मनवले केतने बरिस गुजर गइल रहे! लेकिन उ अब बहुत खुश रहले कि गाँव गइला के बाद पहिला त्योहार फगुआ आवे वाला रहे!

आखिर उ दिन आ गइल! वंशीधर बाबू जब आपना मलकिनी के संगे गाँव पहुँचले त पटी पटीदार सब बहुत खुश भइले! अपना लरिकाईं के संघतियन से मिल के उ बहुत खुश भइले! अब रोज सबेरे उठ के खेत खरिहानी घुमे निकल जास! खेत में फुलाइल सरसो, मटर, लहरत गेंहु के बाल, गेंहु के आरी आसमानी रंग के फुलाइल तिसी के धारी त बगीचा में मंजराइल आम आउर ओकर मध के जइसन मीठ सुगंध उनका मन के मोह लेव! साठ साल के उमिर में उनका आपन लरिकाईं आउर जवानी इयाद आवे लागल! नौकरी और परिवार के जिम्मेदारी इंसान के केतने सोना जइसन जिनगी के समय छिन ले ला, इ कवनो परदेशी से निमन के जानी? वंशीधर बाबू जवना दिमागी सुख खातिर शहर के रेड.ीमेड पार्क के ओर जास, ओह से निमन आत्मा के सुख देवे वाला हर चीज गाँव में रहे बाकिर जिम्मेदारी जवन करावे!

दु चार दिन बितल, शनिचर के दिन रहे! वंशीधर बाबू के मन में आज अलगे उल्लास रहे, काहे कि गाँव के शिव मंदिर पर हर शनिचर के गायकी के परम्परा उनका जनम के पहिले से चलत आवत रहे! ओही मंदिर पर पुरानका लोग आपना गवनई के विधा नवका पीढ़ी के सिखावत, गवावत आउर सौंपत आइल रहे!

किरिन डुबे के इंतजार करते दिन बितल! फेरु का.. वंशीधर बाबू अपना लरिकाईं के संघतिया तिलेसर के संघे मंदिर पर पहुँच गइले! धीरे धीरे गवनई करे सुने वाला लोग जमा हो गइल! पहिले त मंदिर पर खाली ढोलक, झाल आउर डफली, झाँझ से गवनई होखे, पर अब हारमोनियम, तबला, नाल वगैरा भी मंदिर पर उपलब्ध हो गइल रहे! पहिले मंदिर पर लाउडस्पीकर ना रहे, बाकिर अब मंदिर में लाउडस्पीकर लागी गइला से माइक वगैरह के भी बेवस्था हो गइल रहे! गवनई कीर्तन चालू भइल! वंशीधर बाबू के लागल की लरिकाईं लवट गइल बा! कुछ देर भजन कीर्तन भइला के बाद वंशीधर बाबू कहलन... “बाबू लोग, फागुन के दिन बा, दू चार गो फगुआ होखे! ”

वंशीधर बाबू के बात सुन के आउर कुछ लोग कहल.. “ हँ हँ होखे फगुआ ”

गवइया फगुआ गावे खातिर तइयार भइले! बाकिर इ का... फगुआ के जगहा पर पहपट...! उहो कैसेट वाला?

वंशीधर बाबू कहलन... “आरे बाबू कुछ पुरानका में के होखे, आपना माटी के चीज! ”

वंशीधर बाबू के संघतिया वंशीधर बाबू के बात सुन के हंसे लगलन! “आरे वंशीधर, अब उ करेजा कहाँ बा कि लोग फगुआ गाई, फगुआ होठ हिलावला से ना, छाती के दम से होला! अब के नवछेड़िया दूध बेंच के दारु पियत बाड़े त उ करेजा कहाँ से होई? ”

वंशीधर बाबू सोंचे लगले कि गाँव के का हो गइल बा? गाँव पहिले त अइसन ना रहे!

फगुआ के एक दिन पहिले सम्हत जरावे के तैयारी जोर शोर से चलत रहे! घर घर से जलावन लकड़ी इकट्ठा होखे लागल संग में फगुआ के चन्दा वसुली भी होत रहे! वंशीधर बाबू के लागल कि कवनो ढोलक फुट गइल होई, उ चंदा दे दिहले! रात भइल सम्हत फुंका, बाकिर खाली दु चार जना लुकारी ले खदेर के नियम जोगा दिहले! ना ढोल बाजल ना झाल, ना

फगुआ गवाइल... बस सम्हत फुंका गइल! वंशीधर बाबू अपना जिनगी में पहिला बार अइसन निरस सम्हत फुँकात देखले रहले!

जइसे तइसे रात कटल! सबेरे सबेरे हल्ला गुल्ला सुन के वंशीधर बाबू के नींद खुलल! उ घबरा के आपना मलकिनी से पुछले .. ''का भइल? ''

''बड़का टोला पर मार भइल बा, सुनत बानी कि चार जाना के कपारो फूटल बाबा! ''

'' उ कइसे? ''

'' सुननि ह रात ही से संघहि दारु पियत रहलेहसन, भोर होते होते आपसे में खूबे लाठा लाठी कइले बाड़े सन! ''

वंशीधर बाबू सोंचे लगले... हँ त गजबे फगुआ मनावल जात बा गाँव में!

धीरे–धीरे दिन दुपहरिया के ओर बढल! उनकर संघतिया तिलेसर उनका घरे अइले! दुनु संघतिया एक दूसरा के अबीर लगा के अँकवारी मिलले! दुनु जने बइठ के आपन आपन दुखम सुखम लगले बतियावे!

कुछही देर बाद टाली पर बड़का बड़का साउण्ड बॉक्स लदाइल ट्रेक्टर कान फारत सोझा से पार भइल! वंशीधर बाबू तिलेसर से पुछले... ''इ कहाँ जात बा? ''

तिलेसर कहले.. ''आरे इ मंदिर पर जा रहल बा.., काल्ह जवन चन्दा वसुलाइल, एही खातिर! ''

दुनु संघतिया अबीर ले के मंदिर के ओर चल दिहले! गाँव में ज्यादा लोग के ना अबीर लागल रहे ना कवनो रंग! सभे फगुआ के दिने सादा सादा ही लउकत रहे! इ देख के वंशीधर बाबू तिलेसर से कहले... ''का हो तिलेसर,लागते नइखे कि आज फगुआ ह? ''

तिलेसर कहले.. ''अब जेकरा दू चार किता केस लड़े के होई, मारा मारी करे के होई, मुँह फुलौवल करे के होई, उहे नु केहु पर रंग,अबीर डाली? इहाँ गाँव में त इ हाल हो गइल बा कि केहु केहु के दुआर पर नइखे जात! केहु के रंग लगा दी तो मारा मारी हो जात बा! तेवहार के नाम पर के केकरा से टेंट बेसाही!''

तिलेसर से इ बात सुन के वंशीधर बाबु के मन बहुत दुखित भइल! दुनु संघतिया मंदिर पर पहुँचले!मंदिर पर ट्रेक्टर के टाली पर डीजे पर बहुत कान फारे वाला आवाज में अश्लील, फुहर, समाज में ना सुने जाए वाला फगुआ गीत बाजत रहे! ओह फुहर गीतन पर नवछेड़िया त नवछेड़िया, पैंतीस चालीस पार लोग भी डांड़ हिला हिला के नाचत रहे! अब ट्रैक्टर बड़का टोला के ओर चल दिहलस! जइसन गाना के बोल ओह से बढ़के नाचे वाला के हाव भाव! छत पर के पांचिल पर से निहारत मेहरारु, बेटी, बहिन, घुह कढ़ले नवकी कनिआ सब भी डीजे के फुहर कनफरुआ गीत आउर किसिम किसिम के विभत्स नाच के भरपूर मजा लेते रहली!

इ सब देख के वंशीधर बाबू के मन गाछी पर से गिर गइल! उनका इ ना बुझात रहे कि ए गाँव के का हो गइल बा! इ कवन फगुआ ह, इ कवन तेवहार ह?

जहाँ ना आपस में प्रेम होखे, जहाँ केहु केहु के रंग अबीर लगावे में डेरात होखे! जहाँ केहु बेमन से गरे लगावत होखे! जहाँ ढोलक,झाल, डफली, झाँझ के बदले डीजे पर फुहर गाना बजा के बेशरमी से लोग बेटी बहिन के सोझा नाचत होखे! एतने ना जहाँ घर के माई, बहिन, बेटी ओही अश्लील गीत आउर बेशरम नाच के मजा लेते होखे! एकरा के का कहल जाव फगुआ कि कुछ आउर?

जहाँ प्रेम,भाईचारा,लाज, शरम, संस्कार, संस्कृति, के लोग बिल्कुल भुला के इरखा,द्वेष, निर्लज्जता, बेशरमी, फुहरपन अपना लिहले होखे, उहँवा कइसन फगुआ? फगुआ त प्रेम भाईचारा रंग अबीर, ढ़ोल मजीरा के तेवहार ह, जहाँ इहे नइखे त फगुआ कइसन?

❑❑

❍ सिवान , बिहार

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

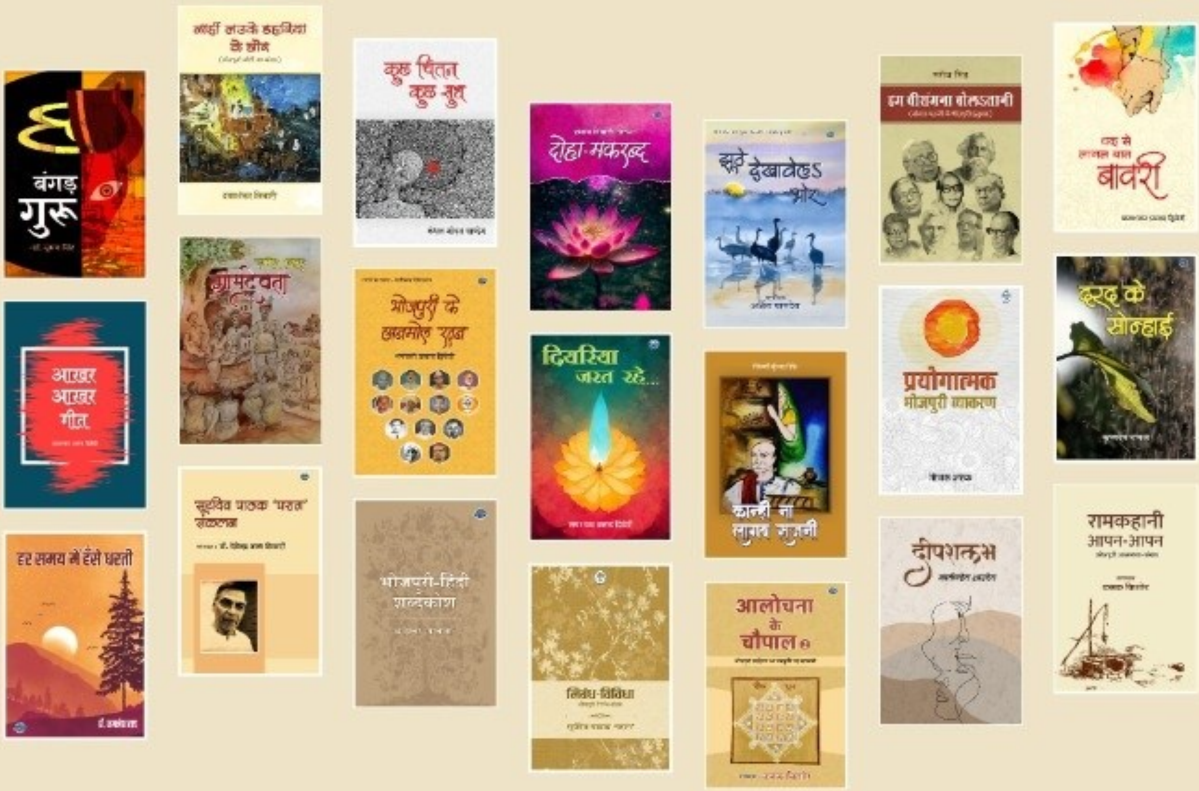

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana